पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

# आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२०, अंकः-०१२, जून, सन्-२०१८, सं०-२०७४ वि०, दयानंदाब्द १६३, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

सावरकर जयन्ती पर विशेष

## स्वधर्म के बिना स्वराज्य तुच्छ है और स्वराज्य के बिना स्वधर्म बलहीन है!

### ईश्वर–प्रदत्त अधिकारों के लिए लड़ना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है !!

### १८५७ के स्वातंत्र्य समर के तात्विक कारणों पर वीर सावरकर के विचार

यदि कारतूसों का डर न होता या अवध का अधिग्रहण न किया गया होता तो सन् १८५७ की क्रांति घटित न होती। इस प्रकार के विचार से अधिक भ्रामक और मूर्खतापूर्ण अन्य कोई मान्यता मिलना असंभव है। कारण, उस डर के मूल में छिपा तत्त्व यदि किसी और घटना द्वारा प्रकट हो जाता तो भी यह क्रांतियुद्ध होता ही, भले अवध का राज्य हड़पा न गया होता, क्योंकि उस राज्य को हड़पने के मूल में छिपा तत्त्व किसी दूसरे राज्य को हड़पने में प्रकट हो जाता। फ्रांस देश की राज्य क्रांति का प्रधान कारण जैसे अनाज के बढ़े हुए मूल्य या बास्तील या राज का पेरिस छोड़कर जाना या दावतों का रंग नहीं था वैसे ही उपर्युक्त आकस्मिक एवं विशिष्ट घटनाएँ इस प्रचंड क्रांति के प्रधान कारण न होकर केवल निमित्तभूत कारण हैं। जैसे सीता-हरण रामायण का केवल निमित्त है और मुख्य या प्रधान कारण उसके मूल में छिपे तत्त्व ही हैं।

वे तत्त्व कौन से थे? हजारों शूरों की तलवारों को उनकी म्यानों से खींचकर रणांगण में चमचमानेवाले वे तत्त्व कौन से थे? निस्तेज हुए मुकुटों को सतेज करने वाले और टूटे पड़े ध्वजों को फिर से खड़ा करने वाले वे तत्त्व कौन से थे जिनपर हजारों व्यक्तियों ने अपने उष्ण रक्त का अभिषेक करना वर्षानुवर्ष अखंड प्रेम से चालू रखा है, ऐसे तत्त्व कौन से थे? मौलवी जिनका उपदेश करते थे, ब्राह्मण जिन्हें 'विजयी भवः' कहकर आशीर्वाद देते थे, दिल्ली की मसजिद से और काशी के मंदिरों से जिनकी यशःप्राप्ति के लिए परमेश्वर की ओर दिव्य प्रार्थनाएँ भेजी जाती थीं, जिनकी सहायता के लिए श्रीमंत हनुमान जी ने स्वयं कानपुर के रण-मैदान पर हुंकार भरी और जिनके लिए झाँसी की महालक्ष्मी ने शुंभ-निशुंभ के रक्त से भीगी अपनी पुराण-प्रसिद्ध तलवार फिर से चलाई, ऐसे वे तत्त्व कौन से थे?

सन् १८५७ की क्रांति के प्रधान कारण जो दिव्य तत्त्व थे वे थे- स्वधर्म व स्वराज्य। अपने प्राणप्रिय धर्म पर भयंकर, विघातक एवं कपटपूर्ण हमला हुआ है, यह यथार्थ दिखते ही स्वधर्म-रक्षणार्थ जो 'दीन-दीन' की गर्जना शुरू हुई उस गर्जना में और अपनी प्रकृतिदत्त स्वतंत्रता के कपटपूर्वक छीने जाने पर और अपने पैरों में पड़ी राजनीतिक गुलामी की जंजीरें देखते ही स्वराज्य प्राप्त करने की पवित्र इच्छा उत्पन्न होने के कारण इस दास्य शृंखला पर जो प्रचंड आघात किए गए उन्हीं में इस क्रांतियुद्ध की जड़ें हैं। स्वधर्म-प्रीति एवं स्वराज्य-प्रीति के तत्त्व हिंदुस्थान के इतिहास में जितनी स्पष्टता से एवं उदात्तता से दिखते हैं उससे अधिक वे किस इतिहास में मिलने वाले हैं? विदेशी और स्वार्थी इतिहासकारों ने इस दिव्य हिंद का चित्र चाहे कितने ही गंदे रंगों से भरा हो, फिर भी जब तक हमारे इतिहास के पृष्ठों पर से चित्तौड़ का नाम पोंछा हुआ नहीं है, सिंहगढ़ का नाम मिटा नहीं है, प्रताप, आदि का नाम मिटा नहीं है या गुरु गोविन्द सिंह का नाम पोंछा नहीं गया है, तब तक ये स्वधर्म और स्वराज्य के तत्त्व हिंदुस्थान के रक्त-मांस में जमे रहेंगे। उनपर क्षण भर गुलामी के भ्रम के बादल चाहे आएँ-सूर्य पर भी बादल आते हैं-परंतु वह क्षण समाप्त होते-न-होते उस तप्त सूर्य की उष्णता से वे पिघल जाएँगे, इसमें शंका नहीं।

स्वराज्य के लिए हिंदुस्थान ने कौन सा प्रयास नहीं किया और स्वधर्म के लिए हिंदुस्थान ने कौन सी दिव्यता अंगीकार नहीं की।...'सूरा सो पचाजिए जो लढ़े दीन के हेत, पुरजा-पुरजा कट मरे तबहु न छोड़े खेत।' (गुरु गोविंद सिंह) इस रीति से स्वधर्म के लिए रण मैदान में टुकड़े-टुकड़े हो जाने पर जो हटते नहीं- वीरों की ऐसी घटनाओं से भारतभूमि का संपूर्ण इतिहास भरा हुआ है।

इस परंपरागत एवं दिव्य तत्त्व का संचार होने के लिए सन् १८५७ के वर्ष में जितने कारण घटित हुए उतने पहले कुछेक बार ही घटित हुए थे। इन विशिष्ट घटनाओं से हिंद भूमि के शरीर में किंचित् प्रस्फुरण हुआ, इन मनोवृत्तियों को विलक्षण चेतना मिली और स्वधर्म एवं स्वराज्य के लिए लोक शक्तियाँ सज्जित होने लगीं। दिल्ली के बादशाह द्वारा स्वराज्य-स्थापना के लिए जारी घोषणापत्र में वे कहते हैं-"हिंद वासियो, यदि हम सब मन में ठान लें तो शत्रु को क्षण भर में धूल चटा सकते हैं और अपने प्राणप्रिय धर्म एवं प्राणप्रिय देश को पूरी तरह भयमुक्त कर सकते हैं।"

इस वाक्य में उल्लिखित दिव्य तत्त्वों के लिए जो क्रांतियुद्ध होता है उस क्रांतियुद्ध से अधिक पवित्र विश्व में दूसरा क्या मिलनेवाला है? स्वदेश-रक्षा, स्वराजय-संस्थापन एवं स्वधर्म-परित्राण के लिए दिल्ली के सिंहासन से प्रार्थित इस स्पष्ट दिव्य एवं स्फूर्तिजनक मंत्र में ही सन् १८५७ की क्रांति का बीज है। बरेली में मुद्रित कर प्रकाशित किए हुए, अवध के नवाब द्वारा निकाले गए दूसरे एक आज्ञापत्र में वे कहते हैं-"हिंदुस्थान के सारे हिंदुओ और मुसलमानो, उठो! स्वदेश बंधुओ, परमेश्वर की दी हुई सौगात में सबसे श्रेष्ठ सौगात स्वराज्य (Sovereign) ही है। यह ईश्वरीय सौगात जिसने हमसे छल से छीन ली है उस अत्याचारी राक्षस को वह बहुत दिन पचेगी क्या? यह ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध किया गया कृत्य क्या जय प्राप्त करेगा? नहीं, नहीं। अंग्रेजों ने इतने जुल्म ढाए हैं कि उनके पाप के घड़े पहले ही लबालब भरे हुए हैं। और उसमें हमारे पवित्र धर्म का नाश करने की कुबुद्धि और समा गई है। अब आप अभी भी शांति से बैठे रहेंगे क्या? आप शांति से बैठें, यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है। क्योंकि सारे हिंदुओं और मुसलमानों के हृदय में उसी की इच्छा उत्पन्न हुई है-परमेश्वर की इच्छा-और आपके पराक्रम से जल्दी ही उनको ऐसा सर्वनाश हो जाएगा कि अपने हिंदुस्थान में उनका छिलका, टुकड़ा भी नहीं रहेगा। छोटे-बड़े के सारे भेदभाव भुलाकर इस सेना में सब ओर ममता का राज हो। क्योंकि पवित्र धर्मयुद्ध में जो वीर स्वधर्म के लिए अपनी तलवार म्यान के बाहर निकालते हैं वे सब समान योग्यता के होते हैं। वे भाई-भाई हैं। उनमें किसी तरह का भेद नहीं है। इसलिए फिर से एक बार मैं सारे हिंदू बंधुओं का आह्वान करता हूँ-उठो और इस परम ईश्वरीय और दिव्य कर्तव्य के लिए रण मैदान में कूद पड़ो।"

ये तत्त्वरत्न देखकर जिसे इस क्रांति युद्ध की ओजस्विता भासित नहीं होगी उसे या तो मंदबुद्धि या दुर्बुद्धि होना चाहिए। ईश्वर-प्रदत्त अधिकारों के लिए लड़ना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है और स्वधर्म एवं स्वराज्य के लिए लड़ने को ही उस समय के भारतीय शूरों ने अपने शस्त्र निकाले थे, यह सिद्ध करने के लिए इससे सबल साक्ष्य और क्या दिया जा सकता है। भिन्न-भिन्न स्थानों और भिन्न-भिन्न कालों में निकाले गए ये घोषणापत्र इस क्रांतियुद्ध की मीमांसा करने के लिए एक अक्षर भी और अधिक लिखने की आवश्यकता शेष नहीं रहने देते।

ये घोषणापत्र ऐरे-गैरे द्वारा निकाले हुए नहीं हैं- सबके आदरणीय एवं सर्वाधिकारी सिंहासन के शासनपत्र हैं। उस समय की क्षुब्ध मनोवृत्ति की उष्ण उसाँसें हैं। संकोच या भय के कारण जब वास्तविक मनोवृत्ति दबाए रखने की कोई आवश्यकता नहीं होती, ऐसे रण-प्रसंग के समय ये हृदय से निकले स्पष्ट बोल हैं। इस युद्ध में जो भी शमशीर निकालते हैं वे सब समान योग्यता के हैं। धर्मयुद्ध में उठी यह वीर गर्जना 'स्वधर्म एवं

(शेष पृष्ठ ३ पर)

## विनय पीयूष

### कौन ?

कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः।
किश्शंस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत्।।

सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्।।

*(यजु. : 23/45,46)*

कौन एकाकी विचरता?
कौन फिर-फिर जन्मता है?
शीत की औषधि भला क्या?
बीज-रोपण के लिए, बोलो,
वृहत् आधार क्या है?

सूर्य एकाकी विचरता,
चन्द्र फिर-फिर जन्मता है,
शीत की है अग्नि औषधि,
बीज-रोपण के लिए, देखो,
वृहत् उर्वर धरा है!

*काव्यानुवाद : अमृत खरे*

## सम्पादकीय

# आर्यों का नया तीर्थ

युग युग से प्रचलित अनेक शास्त्रीय शब्दों की रूढ़िगत परिभाषाओं को दर किनार करते हुए युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने ग्रंथ 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' के माध्यम से उनके यथार्थ सत्य स्वरूप का उद्घाटन किया तथा सन्तों की वानियों की तरह वह स्वकल्पित न करते हुए उसे शास्त्रीय आर्ष ग्रंथों का पुष्ट आहार प्रदान किया। शंताब्दियों से देशवासी मानते चले आरहे है कि तीर्थ स्नान अर्थात् गंगा आदि पवित्र नदियों का दर्शन अथवा स्नान मोक्ष प्रदायक है किन्तु महर्षि दयानन्द तीर्थ की परिभाषा इस प्रकार करते हैं-

"जिससे दुःख सागर से पार उतरें अर्थात् जो सत्यभाषण, सत्संग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्या दानादि शुभकार्य हैं, उसी को 'तीर्थ' मानता हूँ। इतर जल स्नानादि को नहीं।"

यह परिभाषा केवल कागजों में अथवा भाषणों-प्रवचनों में सिमटकर नहीं रह गई वरन् व्यवहार में परिणत की गई तथा यह आर्य समाज की ऐसी मौलिक शक्ति बन गई कि हजारों आँधियों और तूफानों में भी जो आर्य समाज के अस्तित्व को बनाये रखने में समर्थ हुई है। अन्यथा जहाँ वामपंथी विचारधारा के गैरिक वाचावेष्ठित छद्म वेशधारी द्वारा सार्वदेशिक सभा के कार्यालय और सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया गया हो, वैदेशिक दुरभिसंधि से संयुक्त होकर आर्य प्रतिनिधि सभाओं की व्यवस्था छिन्न भिन्न कर दी गई हो, तो आर्य समाज का अस्तित्व ही खत्म जो जाना चाहिए किन्तु ऐसा हुआ नहीं। आर्य समाज ने अपनी मौलिक शक्तियों के बलबूते अस्तित्व में रहकर स्वार्थसाधक व्यक्तियों को संदेश दे दिया है कि हम तुम्हारे बिना भी चल सकते हैं, जीवित रह सकते हैं क्योंकि महर्षि दयानन्द की सैद्धान्तिक तपश्चर्या और ब्रह्मचर्य विद्या बल हमारे साथ है।

आर्य समाज की मौलिक अखंड शक्ति आज २०१८ में भी जिन संस्थाओं अथवा संगठनों में निहित है उन्हें हम सच्चे तीर्थ कह सकते हैं। अनेक संस्थाएँ योग्य विद्वानों-विदुषियों के संरक्षण में कार्यरत होकर आर्य समाज की महत् शक्ति की उद्घोषणा कर रही हैं, आर्य समाज द्वारा जो मुख्य तीर्थ विकसित हुए वे ही इसके मूल शक्ति स्रोत हैं। इन तीर्थों में पंडे पुजारी तो नहीं किन्तु त्यागी-बलिदानी विद्वान् पुरुष अवश्य मौजूद रहते हैं- जो अहर्निश जन-सामान्य की सेवा करते हैं, राष्ट्र निर्माण का प्रशिक्षण देते हैं योग्य मानव तैयार करते हैं। इनमें ही आर्य समाज की मौलिक शक्ति सन्निहित है। ये वर्तमान समय में प्रमुख तीर्थ हैं-

१. टंकारा-महर्षि दयानन्द जन्मभूमि(गुजरात) २. अजमेर-महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थल-महर्षि उद्यान(राजस्थान) ३. वाराणसी-काशी शास्त्रार्थ स्थल स्मारक दुर्गाकुण्ड(उत्तर प्रदेश) ४. उदयपुर-सत्यार्थ प्रकाश न्यास(राजस्थान)

उपर्युक्त तीर्थ ऐसे हैं, जहाँ प्रतिवर्ष आध्यात्मिक मेले लगते हैं, सत्संग, योगाभ्यास, यज्ञ और वेद प्रचार की समुचित व्यवस्था है। टंकारा स्मारक उद्योगपति मुंजाल तथा श्री पूनम सूरी जैसे विख्यात महापुरुषों के सान्निध्य में श्री अजय सहगल की विशिष्ट देखरेख में विकसित है। यहाँ से 'टंकारा' पत्रिका भी अच्छे ढंग से प्रकाशित हो रही है। इसी तरह महर्षि निर्वाण भूमि में परोपकारिणी सभा की छत्रछाया में उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर है-यहाँ दीपावली के आसपास विशाल महोत्सव होता है, ऋषि मेला लगता है, अतिथियों के ठहरने, भोजन आवास आदि की समुचित व्यवस्था रहती है। 'परोपकारी' पत्रिका प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित होती है। प्रख्यात मनीषी प्रो.राजेन्द्र जिज्ञासु जैसे विद्वानों का सान्निध्य इस संस्था को प्राप्त है। इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश न्यास- नवलखा महल, उदयपुर में स्थित है। यह महाराजा उदयपुर के सौजन्य और दानवीर श्री पोद्दार की देन है। जाने माने विद्वान् 'तपोभूमि' सम्पादक महात्मा प्रेमभिक्षु के सुयोग्य पुत्र श्री अशोक आर्य के निर्देशन में सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर अनवरत कार्यरत है। यह एक दर्शनीय स्थल है। यहाँ सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लासों को शिलालेखों के रूप में उत्कीर्ण करने का गौरवशाली कार्य दानवीर महाशय धर्मपाल आर्य (एम.डी.एच.) के सहयोग से चल रहा है। 'सत्यार्थ सौरभ' एक सुन्दर पत्रिका भी यहाँ से प्रकाशित होती है। काशी शास्त्रार्थ स्मारक दुर्गाकुण्ड वाराणसी भी एक दर्शनीय स्थल है। यद्यपि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के भू.पू. अधिकारियों की अकर्मण्यता से अभी भी इस स्मारण का पूर्णतया विकास होना शेष है तथापि सैकड़ों देश प्रदेश के पर्यटक इस स्थल को देखने के लिए आते रहते हैं।

यह सर्वविदित है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' की वास्तविक शक्ति 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में अन्तर्निहित है, जिसकी रचना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुण्य भूमि अयोध्या स्थित सरयूबाग में बैठकर की थी। सरयूबाग, अयोध्या आर्य समाज का पाचवाँ 'शक्तितीर्थ' है, जिसके निर्माण का बीड़ा कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) ने उठाया है। आनन्द बाबू पहले ही टाँडा में आर्य समाज, आर्य कन्या इंटर कालेज तथा डी.ए.वी.एकेडमी जैसी गतिशील संस्थाओं के समुन्नयन द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

मो.इरफान अंसारी के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक हेतु जमीन की रजिस्ट्री सम्पन्न करके आनन्द बाबू ने इस विश्व के अनूठे तीर्थ स्थल के निर्माण का प्रथम चरण पूरा कर दिखाया है और इस प्रकार आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह २०१८ में २६ मार्च को उन्हें जो 'जन नायक' की उपाधि दी गई थी, उसे १६ जून को सार्थक सिद्ध कर दिया है। अब समस्त आर्य हिन्दू जनता का कर्तव्य है कि इस 'जननायक' के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े।

## सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८५

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

### विद्या अविद्या

जैसे बहिष्करण श्रोत्रादि इन्द्रियों से अच्छे बुरे शब्दादि विषयों का ग्रहण करके जीवन सुखी दुःखी होता है वैसे ही अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, विकल्प, निश्चय, स्मरण और अभिमान का करने वाला दण्ड और मान्य का भागी होता है।

जैसे तलवार से मारने वाला दण्डनीय होता है तलवार नहीं होती वैसे ही देहेन्द्रिय अन्तःकरण और प्राणरूप साधनों से अच्छे बुरे कर्मों का कर्त्ता जीव सुख दुःख का भोक्ता है। जीव कर्मों का साक्षी नहीं, किन्तु कर्त्ता भोक्ता हे। कर्मों का साक्षी तो एक अद्वितीय परमात्मा है। जो कर्म करने वाला जीव है वही कर्मों में लिप्त होता है; वह ईश्वरसाक्षी नहीं।

(प्रश्न) जीव ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है। जैसे दर्पण के टूटने फूटने से बिम्ब की कुछ हानि नहीं होती, इसी प्रकार अन्तः करण में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब जीव तब तक है कि जब तक वह अन्तः-करणोपाधि है। जब अन्तःकरण नष्ट हो गया तब जीव मुक्त है।

(उत्तर) यह बालकपन की बात है। क्योंकि प्रतिबिम्ब साकार का साकार में होता है। जैसे मुख और दर्पण आकार वाले हैं और पृथक् भी हैं; जो पृथक् न हो तो भी प्रतिबिम्ब नहीं हो सकता। ब्रह्म निराकार, सर्वव्यापक होने से उसका प्रतिबिम्ब ही नहीं हो सकता।

(प्रश्न) देखो! गम्भीर स्वच्छ जल में

निराकार और व्यापक आकाश का आभास पड़ता है। इसी प्रकार स्वच्छ अन्तःकरण में परमात्मा का आभास है। इसलिये इसको चिदाभास कहते हैं।

(उत्तर) यह बालबुद्धि का मिथ्या प्रलाप है। क्योंकि आकाश दृश्य नहीं हो तो उसको आंख से कोई भी क्योंकर देख सकता है।

(प्रश्न) यह जो ऊपर को नीला और धुंधलापन दीखता है वह आकाश नीला दीखता है वा नहीं?

(उत्तर) नहीं।

(प्रश्न) तो वह क्या है?

(उत्तर) अलग-अलग पृथिवी, जल और अग्नि के त्रसरेणु दीखते हैं। उसमें जो नीलता दीखती है वह अधिक जल जो कि वर्षता है सो वही नील; जो धुंधलापन दीखता है वह पृथिवी से धूली उड़कर वायु में घूमती है वह दीखती और उसी का प्रतिबिम्ब जल वा दर्पण में दीखता है; आकाश का कभी नहीं।

(प्रश्न) जैसे घटाकाश, मठाकाश, मेघाकाश और महदाकाश के भेद व्यवहार में होते हैं वैसे ही ब्रह्म के ब्रह्माण्ड और अन्तःकरण उपाधि के भेद से ईश्वर और जीव का नाम होता है। जब घटादि नष्ट हो जाते हैं तब महाकाश ही कहाता है।

(उत्तर) यह बात अविद्वानों की है। क्योंकि आकाश छिन्न भिन्न नहीं होता। व्यवहार में भी 'घड़ा लाओ' इत्यादि व्यवहार होते हैं। कोई नहीं कहता कि घड़े का आकाश लाओ। इसलिये यह बात ठीक नहीं। *(-क्रमशः)*

## वेदांजलि

# वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

❑पं.शिव कुमार शास्त्री,
भू.पू.संसद सदस्य

**यस्मात्पक्वादमृतं संबभूव यो गायत्री अधिपतिर्बभूव।**
**यस्मिन्वेदा निहिता विश्वरूपास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम्।।**

*-अथर्व.4/35/6*

**शब्दार्थ-**

(**यस्मात् पक्वात्**) जिस परिपक्व [ओदन] से (**अमृतं**) अमृत (**सम्बभूव**) उत्पन्न हुआ है, (**यः**) जो (**गायत्रीः**) गायत्री का (**अधिपतिः**) स्वामी (**बभूव**) था और है (**यस्मिन्**) जिसमें (**विश्वरूपाः वेदाः**) समस्त शब्दमय ज्ञानरूप वेद (**निहिताः**) निहित हैं (**तेन ओदनेन**) उस कारणभूत तत्त्व से (**मृत्युं**) मृत्यु को (**अतितराणि**) तर लूँ।

**व्याख्या-**

इस मंत्र में **'यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः'**- विश्व का रूप वेद में निहित है, इसी भाव को ध्यान में रखकर ऋषि दयानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' शब्द लिखे। अपनी इसी धारणा के अनुसार ऋषि ने वेदमंत्रों से बीजरूप में प्रमाण उद्धृत करके इस बात का दिग्दर्शन भी कराया कि तारविद्या, जलयान तथा विमानादि समस्त वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का संक्षिप्त और सूक्ष्म वर्णन वेद में विद्यमान है। ऋषि ने अपने महान् ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में इन सब स्थापनाओं की पुष्टि में वेदों से प्रमाण उद्धृत किये हैं।

बहुत से लोगों की, विशेषरूप से अंग्रेजी पढ़े-लिखों की, यह धारणा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पाश्चात्य वैज्ञानिक उन्नति को देखकर वेद से भी उन्हीं बातों को दिखाने का प्रयत्न किया है, किन्तु ऐसी बातें उनकी अनभिज्ञता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। महर्षि के समय में तो मोटर तक का निर्माण नहीं हुआ था और विमान का आविष्कार तो सन् 1901 में हुआ। ऋषि के सामने तो वेद और आर्ष साहित्य के अतिरिक्त और कुछ था ही नहीं। ऋषि ने पूना के 10वें प्रवचन में यह कहा भी था कि मैंने विमान बनाने की पुस्तक देखी है। आर्य विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने एक अति प्राचीन भारद्वाज ऋषिकृत विमान शास्त्र को खोजकर छपवा दिया है। उन्होंने ने अपनी स्थापना की पुष्टि में ऋग्वेद के 11 मंत्र उद्धृत किये हैं जिन पर विचार करने से वही परिणाम निकलता है, जो ऋषि ने निकाला है। ऋग्वेदादि- भाष्यभूमिका में उद्धृत अन्तिम मंत्र है-

**द्वादशः प्रधयंचक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।**
**तस्मिन्त्साकं विशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः।।**

*(ऋ.1/164/48)*

**ऋषिकृत अर्थ-** 'इन यानों के बाहर भी खम्भे रचने चाहिएँ जिनमें सब कलायन्त्र लगाए जाएँ। उनमें एक चक्र बनाना चाहिए, जिसके घुमाने से सब कला घूमें। फिर उसके मध्य तीन चक्र रचने चाहिएँ कि एक के चलाने से सब रुक जाएँ, दूसरे के चलाने से आगे चलें और तीसरे के चलाने से पीछे चलें। उसमें तीन सौ बड़ी-बड़ी कीलें, अर्थात् पेच लगाने चाहिएँ जिनसे उनके सब अंग जुड़ जाएँ और उनके निकालने से सब अलग-अलग हो जायँ। उनमें साठ कलायन्त्र रचने चाहिएँ; कई एक चलते रहें और कुछ बन्द रहें, अर्थात् जब विमान को ऊपर चढ़ाना हो तो भापघर के ऊपर के मुख बन्द रखने चाहिएँ; और ऊपर से नीचे उतारना हो तब ऊपर के मुख अनुमान से खोल देने चाहिएँ, ऐसे ही पूर्व को चलाना हो तो पूर्व के बन्द करके पश्चिम के खोलने चाहिये और जो पश्चिम को चलाना हो तो पश्चिम के बन्द करके पूर्व के खोल देने चाहिएँ। इसी प्रकार उत्तर व दक्षिण में जान लेना। इस महागम्भीर शिल्पविद्या को सर्वसाधारण लोग नहीं जान सकते, किन्तु जो महाविज्ञान हस्तक्रिया में चतुर और पुरुषार्थी लोग हैं, वे ही सिद्ध कर सकते हैं।"

अंग्रेजी पढ़कर प्राचीन विद्याओं का उपहास करनेवालों को योगिराज अरविन्द घोष ने अपनी गीता की भूमिका के पृष्ठ 34 पर लिखा है- "संजय दिव्यदृष्टि (Clairvoyance) और दूरश्रवण (Clairvience) को पा करके दूर से युद्ध क्षेत्र का लोमहर्षक दृश्य और महारथियों का सिंहनाद इन्द्रियगोचर करने में समर्थ हुआ था, तो कदाचित् यह बात संजय की दिव्यदृष्टि की प्राप्ति की अपेक्षा अंग्रेजी शिक्षितों के लिए अधिक विश्वास योग्य होती, पर व्यासदेव ने जो दिव्यदृष्टि की शक्ति संजय को प्रदान की थी उसको गप्प कहकर हंसी उड़ाई जाती है।"

किन्तु अब वैज्ञानिक प्रगति के साथ कुछ खुले मस्तिष्क से वेद के अध्ययन और खोजों ने अंग्रेज और पौराणिक मस्तिष्कों में भारी क्रान्ति ला दी है। अब पौराणिक विद्वान् भी यह स्वीकार करते हैं कि वेद में वर्णित **मित्र** और **वरुण** किन्हीं देवताओं के नाम न होकर 'आक्सीजन' और 'हाइड्रोजन' उन गैसों के नाम हैं, जिनके मिलने से पानी बनता है। इसी प्रकार अनेक वैज्ञानिक तथ्यों को वे अंगीकार करते हैं और उनका समर्थन भी। अतः वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। **'यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः'** में रंचमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है, अपितु प्राचीन ग्रन्थों का अनुशीलन हमें इस परिणाम पर पहुँचाता है कि अनेक वैज्ञानिक आविष्कार जो प्राचीन समय में थे, मध्यकाल में आकर लुप्त हो गए और आज के वैज्ञानिकों की भी अभी वहाँ तक पहुँच नहीं हो पाई है।

अतः इस प्रकार के युग में भारतीय विद्वानों को निष्ठापूर्वक वेद के वैज्ञानिक प्रकरणों को प्रयोगशालाओं में परीक्षण करना चाहिए। *("श्रुति सौरभ" से साभार)*

# दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-१०६

अयं कालो यातः कथमपि कुसन्तप्तमनसा
यतोऽन्ते याताः स्मो ननु वृकमुखात् सिंहवदने।
न तैस्ते संरुद्धा न्यपतदिह सत्ता शवमिव
रणन्तस्तेऽस्माभिः सपदि तु फिरंगीपदगताः।।

मुस्लिम शासन-काल का
वह समय हमने
बुरे सन्ताप से भरे मन से
किसी तरह गुजार दिया !
इसके बाद तो हम
भेड़िये के मुख से निकल कर
सिंह के जबड़े में जा फँसे !!
उन्होंने उन्हें रोका नहीं बल्कि
उनकी सत्ता मुर्दे की तरह
उनके कदमों में ढह गयी !!!
वे हमसे तो अन्त तक लड़ते रहे,
लेकिन फिरंगियों के कदमों में
अचानक गिर पड़े।

*('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)*

## सत्संग

# जिज्ञासा और समाधान

**जिज्ञासा** :

क्या आर्य वीर दल अथवा आर्य समाज में ध्वज प्रणाम को मान्यता प्राप्त है? यदि नहीं, तो आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के मुखपत्र 'आर्य मित्र' के अंक २६ मई '१८, पृ.सं.८ पर चित्र परिचय के नीचे अंकित 'आर्य वीर दल परेड को ध्वज प्रणाम *करते हुए सभामंत्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती व श्री आचार्य देवव्रत* जी' वाक्य का क्या अर्थ है? कृपया स्पष्ट करें।

&ohjsUnz dqekj vk;Z ^ohjth*
*पूर्व नगर नायक, आर्य वीर दल, सीतापुर*

**समाधान** :

आर्य वीर दल और आर्य समाज में 'ध्वज प्रणाम' की कोई मान्यता, व्यवस्था या परम्परा नही है। यह सर्वथा सिद्धान्तसिद्ध माना गया है। यहाँ ध्वजारोहण, ध्वजावतरण तथा ध्वजगान तो किया जाता है किन्तु 'ध्वज प्रणाम' नहीं किया जाता है-ध्वज प्रणाम तो जड़पूजा है। प्रणाम उसी को करते हैं जो उसे समझे या उत्तर दे सके। आर्य वीर दल का तो अपना संविधान है, आर्य वीर दल शिक्षण शिविर जैसी पुस्तकें हैं- वहाँ किसी तरह की गलती की कोई गुंजाइश नहीं है। मैं स्वयं १९६१-६४ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा मनोनीत आर्य वीर दल विभाग का अधिष्ठाता रहा हूँ तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त प्रान्तीय संचालक भी। आर्य समाज में भी ऐसे कार्यक्रमों की अनुमति नहीं दी जाती है, जिसमें ध्वज प्रणाम होता हो! जहाँ तक 'आर्य मित्र' में प्रकाशित चित्र और चित्र परिचय की बात है- यह सम्पादकीय विभाग की चूक हो सकती है क्योंकि सभा के इतने बड़े अधिकारी ऐसा सिद्धान्त विरुद्ध कार्य क्यों करेंगे?

**-सम्पादक**

*(पृष्ठ 1 का शेष....)*

## स्वधर्म के बिना...

स्वराज्य' दोनों तत्त्वों को उच्चारण एवं जयघोष करती है।

पर क्या ये दोनों ही तत्त्व (स्वराज्य स्वधर्म) परस्पर विरुद्ध या भिन्न समझे जाते थे? स्वधर्म एवं स्वराज्य का एक दूसरे से किसी भी अर्थ में संबंध नहीं है, ऐसी कम-से-कम प्राचीन लोगों की धारणा कभी नहीं थी। मैजिनी के कथनानुसार, स्वर्ग और पृथ्वी को किसी एक बाँस के बीच में बाँधकर अलग नहीं किया गया है। ये दोनों तो एक ही वस्तु के दो छोर हैं। ऐसी ही प्राचीन जनों की पूर्वा पर यथार्थ एवं परिपक्व धारणा है। हमारी स्वधर्म की कल्पना स्वराज्य से भिन्न नहीं है। ये दोनों साध्य नाते से संलग्न हैं। स्वधर्म के बिना स्वराज्य तुच्छ है और स्वराज्य के बिना स्वधर्म बलहीन है। स्वराज्य नामक ऐहिक सामर्थ्य की तलवार स्वधर्म नामक पार लौकिक साध्य के लिए हमेशा बाहर निकली रहनी चाहिए। यह प्राचीन जनों के मनका रुझान इतिहास में पग-पग पर दिखेगा। प्राचीन काल में हुई क्रांतियों को धार्मिक स्वरूप क्यों मिलता है, या यह कहें कि धार्मिक पवित्रता के या धर्म संलग्नता के सिवाय प्रचंड क्रांति का होना-यह बात प्राचीन इतिहास में बिलकुल भी क्यों ज्ञात नहीं है, इसका बीज भी धर्म के इस विश्वव्यापक स्वरूप में ही है। हिंदुस्थान के इतिहास में आज तक अखंड रूप से व्यक्त होते आए स्वराज्य एवं स्वधर्म के साधन और साध्य तत्त्व इस सन् १८५७ के क्रांतियुद्ध में भी व्यक्त हुए, इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं है। दिल्ली के बादशाह द्वारा पहले-पहल निकाले गए घोषणा पत्र का उल्लेख पहले किया गया है। उसके बाद जब दिल्ली को अंग्रेजी सेनाओं ने घेर लिया और युद्ध घमासान हो गया तब बादशाह ने हिंदुओं के लिए दूसरा घोषणापत्र जारी किया। उसमें वे कहते हैं-'जमी राजगान वो रोसाए हिंद पर वाझे होके तुम बेहामा उजू: नेकी और फय्याजी में मुश्तईर जो... खुदावंत ने तुमको ये मर्तबए आली और मुल्क और दौलत और हुकूमत इसी वास्ते बख्शी हे कि तुम उन लोगों को, जो तुम्हारे मजहब में दखलंदाजी करें, गारद करो...।' (हमें ईश्वर ने संपत्ति, देश, अधिकार किसलिए दिए हैं? ये सभी केवल व्यक्ति से संबंधित सुख-भोग के लिए न होकर स्वधर्म संरक्षण के पवित्र हेतु के लिए हैं।)

परंतु इस पवित्र एवं अंतिम हेतु के ये साधन कहाँ हैं? पहले दिए हुए घोषणा पत्र के अनुसार परमेश्वर की सब सौगातों में अत्यंत श्रेष्ठ स्वराज्य की सौगात कहाँ है? दौलत कहाँ है? मुल्क कहाँ है? हुकूमत कहाँ है? गुलामी के प्लेग में यह सारी दैविक स्वतंत्रता मृतप्राय हो गई है। गुलामी का प्लेग किस तरह संहार कर रहा है, यह दिखाने के लिए उपर्युक्त में नागपुर का, अवध का, झाँसी का स्वराज्य' सब कैसे धूल में मिला दिए गए, इसका मार्मिक वर्णन करने के बाद ऐसी चेतावनी दी गई है कि इस तरह धर्म रक्षण के साधन गँवाने पर तुम परमेश्वर के दरबार में अपराधी और देशद्रोही माने जाओगे।

ईश्वर की आज्ञा है कि स्वराज्य प्राप्त करो। क्योंकि स्वधर्म-रक्षण का वह मूल साधन है। जो स्वराज्य को प्राप्त नहीं करता, जो गुलामी में तटस्थ रहता है वह अधर्मी एवं धर्मद्रोही है। इसलिए स्वधर्म के लिए उठो और स्वराज्य प्राप्त करो।

'स्वधर्म के लिए उठो और स्वराज्य प्राप्त करो'-इस तत्त्व ने हिंदुस्थान के इतिहास में कितने दैवी चमत्कार किए हैं? "धर्मासाठी मरावें, मरोनि अवध्यांसि मारावें। सरिता मारिता ध्यावें, राज्य आपुलें।"

धर्म हेतु मरें, मरते हुए सारों को मारें,
मारते-मारते जीतें, राज्य अपना।

सन् १८५७ के क्रांतियुद्ध का यही तात्त्विक कारण है। इस क्रांतियुद्ध का यही मनःशास्त्र है। जिस दूरबीन से उस युद्ध का स्पष्ट एवं सत्य स्वरूप दिखेगा, ऐसी खरी दूरबीन अर्थात् धर्म हेतु मरें, मरते हुए सारों को मारें, मारते मारते जीतें राज्य अपना।

इस दूरबीन से उस क्रांति की ओर देखें तो कितना अलग दृश्य दिखने लगता है। स्वधर्म एवं स्वराज्य-इन दो पवित्र कारणों से जो क्रांतियुद्ध लड़ा गया उसकी पवित्रता पराजय से भंग नहीं होती। गुरु गोविंद सिंह के प्रयास तादृश रीति से विफल रहे, इस कारण उसका दिव्यत्व कम नहीं होता। या सन् १८४८ में इटली में राज्य क्रांति की जो विशाल लहर उठी उसमें उस क्रांति के नेताओं की संपूर्ण पराजय हुई, इस कारण उनके हेतु का पुण्य क्षीण नहीं होता।

जस्टिन मैकार्थी ने कहा है-"वस्तु स्थिति यह है कि भारतीय प्रायद्वीप के संपूर्ण उत्तरी एवं उत्तर-पश्चिमी प्रदेशों में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध देशी जातियों ने विद्रोह कर दिया था। केवल सिपाहियों ने ही विद्रोह नहीं किया, इसे कोरी सैनिक क्रांति का ही नाम नहीं दिया जा सकता। यह तो भारत पर आंग्ल सत्ता के विरुद्ध सैनिक कठिनाइयों, राष्ट्रीय घृणा और धार्मिक कट्टरता का संयुक्त उभार था। इसमें देशी राजाओं और सैनिकों ने भी भाग लिया। मुसलमान और हिंदुओं ने अपने शताब्दियों के धार्मिक विरोध को भुलाकर ईसाइयों के विरुद्ध हाथ मिलाये थे। घृणा और चिंता ने इस महान् विद्रोही आन्दोलन को प्रोत्साहित किया था। चरबीवाले कारतूसों के विवाद ने तो केवल चिनगारी दहकाई और उस चिनगारी ने सभी ज्वलनशील पदार्थों में आग भड़का दी। यदि इस चिनगारी से अग्नि प्रज्वलित न होती तो किसी अन्य माध्यम से भी यही कार्य संपन्न हो जाता।...मेरठ के सिपाहियों ने क्षण भर में ही एक नेता पा लिया, उन्हें एक ध्वज भी मिल गया और उद्देश्य भी और यह विद्रोह एक क्रांतियुद्ध में परिणत हो गया। जब वे प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों से जगमगाती यमुना के तट पर पहुँचे तो उन्होंने अनजाने में ही इतिहास की एक निर्णायक घड़ी को प्राप्त कर लिया तथा सैनिक विद्रोह को एक राष्ट्रीय धर्मयुद्ध में परिणत कर दिया।"

चार्ल्स बाल लिखते हैं-"आगे चल कर धारा किनारों को तोड़कर बह निकली और उसने भारत की सैनिक वसुंधरा को आप्लावित कर दिया। उस समय तो यही आशा की जाती थी कि ये धाराएँ संपूर्ण यूरोपीय तत्त्वों को विनष्ट कर निगल जाएँगी। जिस समय विद्रोह की यह धारा पुनः मर्यादित होगी और अपने आपको सीमाओं में आबद्ध कर लेगी तो राष्ट्रभक्त भारत अपने विदेशी शासकों से अपने आपको स्वतंत्र कर लेगा तथा वह देशी राजाओं के स्वतंत्र राज्यदंड के सम्मुख नतमस्तक होगा। अब यह और भी अधिक महत्त्व पूर्ण रूप ग्रहण कर चुका था। यह विद्रोह उस संपूर्ण जनता के विद्रोह का रूप धारण कर चुका था जो काल्पनिक गलतियों से क्षुब्ध होकर भड़क उठी थी और घृणा व कट्टरता के भ्रम में आबद्ध हो चुकी थी।"

'कंप्लीट हिस्ट्री ऑफ द ग्रेट सेपॉय वार' शीर्षक अपनी पुस्तक में व्हाइट लिखते हैं-"यदि मैं अवधवासियों के द्वारा प्रदर्शित साहस की प्रशंसा नहीं करूँगा तो एक इतिहासकार का पावन दायित्व न निभा पाऊँगा। नैतिक दृष्टि से अवध के ताल्लुकेदारों की एक महान् भूल यह थी कि उन्होंने हत्यारे विद्रोहियों से हाथ मिलाया। किंतु इसके लिए भी उन्हें सदुद्देश्य से प्रेरित निष्ठावान् देश भक्तों के रूप में मान्यता दी जा सकती है, क्योंकि वे अपनी मातृभूमि और सम्राट् के लिए संग्राम कर रहे थे, स्वराज्य और स्वधर्म के लिए संघर्षरत हुए थे।"

*(ब्रिटिश शासन के प्रतिबंधों के बावजूद सन् १९०९ में प्रथम बार गुप्त रूप में प्रकाशित वीर सावरकर की क्रांतिकारी पुस्तक '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' के प्रथम अध्याय 'स्वधर्म और स्वराज्य' का सम्पादित अंश-साभार)*

व्यक्ति-विशेष

**बौद्धिक चेतना के स्पंदनों से युक्त**

## डॉ. चन्द्रपाल शर्मा

*सर्वोदय नगर, पिलखुआ-२४५३०४*

सीतापुर से प्रकाशित त्रैमासिक 'मानस चंदन' की सौरभ में स्वाभाविक रूप में लिपटे रहने वाले मणिधरों के मध्य एक सुधाधर की मौजूदगी- उसकी महत्ता को बढ़ा देती है। सुधाधर से मेरा अभिप्राय- डॉ.चन्द्रपाल शर्मा, पिलखुआ से है जिनके लेख 'मानस चंदन' में प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। 'वाल्मीकि रामायण में उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है' शीर्षक लेख ने मेरी उत्सुकता को बढ़ा दिया तथा मैंने उनसे मानस की इस अर्द्धाली के अनुसार परिचय प्राप्त करने का निश्चय किया-

'एहि सन हठि करिहौं पहचानी, साधु ते होय न कारज हानी'।

डॉ.चन्द्रपाल शर्मा से परिचय प्राप्त करने का सुफल यह हुआ कि मैंने उनकी अनुमति से उक्त लेख को दो अंकों में मुखपृष्ठ पर (कवर स्टोरी) प्रकाशित किया जिससे 'आर्य लोक वार्ता' के पाठकों के मध्य भूचाल सा आ गया। पत्र पर पत्र, प्रतिक्रिया पर प्रतिक्रिया के पत्र और इस सम्बन्ध में और अधिक जानने की जिज्ञासाएँ प्रबल होने लगीं। 'आर्य लोक वार्ता' के दो अंकों में 'वाल्मीकि रामायण का उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त है' लेख को निम्नांकित शीर्षकों से प्रकाशित किया गया- (१) 'सीता परित्याग और शम्बूक वध की फर्जी कहानियाँ जोड़ी गईं' (अक्टूबर '१७) (२) 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने न सीता का परित्याग किया न शम्बूक वध' (नवम्बर '१७)।

डॉ.शर्मा अपनी लेखनी द्वारा महत् कार्य का सम्पादन कर रहे हैं- साहित्य का पवित्र अनुष्ठान है-'शिवेतर क्षतये' (काव्य प्रकाश-आर्य मम्मट) अर्थात् अशिव की क्षति करना। किसी देवोपम महापुरुष के माथे कलंक मढ़ना- क्या अशिव कार्य नहीं है? इस दृष्टि से डॉ.चन्द्रपाल शर्मा एक सच्चे साहित्य सेवी हैं, लेखक हैं। वाणी के वरद पुत्र हैं, अन्यान्य आधुनिक लेखकों से उनकी तुलना नहीं की जा सकती है। यद्यपि भगवती सीता के परित्याग की कथा की काल्पनिकता पर स्वनामधन्य कविवर डॉ.रामकुमार वर्मा का 'उत्तरायण' खण्डकाव्य प्रकाशित हो चुका है और अनेक वर्षों तक अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद के बी.ए.पाठ्यक्रम में निर्धारित रहा है। स्वयं मेरा अपना लेख 'स्वतंत्र भारत' दैनिक में कई वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था; तथापि डॉ.शर्मा का तात्विक शोधपूर्ण विवेचन सर्वाधिक हृदयग्राही और प्रशंसा के योग्य है। लखनऊ की आर्य जनता डॉ.चन्द्रपाल शर्मा के विचारों को उनके श्रीमुख से सुनना-समझना चाहती है।

एक प्रख्यात परास्नातक महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होकर डॉ.शर्मा की लेखनी निरन्तर जागरूक, सक्रिय और बौद्धिक चेतना के स्पंदनों से युक्त है। रूढ़िवादी लेखन में उनकी कोई अभिरुचि नहीं है। अभी अभी २०१७ में ही उनकी दो पुस्तकें- 'चिन्तन की मणियाँ' तथा 'अंक ज्योतिष' डायमण्ड बुक्त, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई हैं जिनका सर्वत्र स्वागत हुआ है। सीता परित्याग की काल्पनिकता पर आप शीघ्र ही डॉ.शर्मा का लेख 'आर्य लोक वार्ता' में देख सकेंगे। यह कितने सौभाग्य की बात है आधुनिक कविता के शलाका पुरुष एवं राजनेता- डॉ.कुमार विश्वास को डॉ.चन्द्रपाल शर्मा का सुपुत्र होने का सौभाग्य और गौरव प्राप्त है।

**-सम्पादक**

# शुभाकांक्षा

आपके द्वारा रचित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' मुझे अभी प्राप्त नहीं हो सकी है। कृपया यह बतायें कि यह पुस्तक सीतापुर में कहाँ मिल सकेगी। अभी 'आर्य्य लोक वार्ता' के मई '१८ अंक में इस पुस्तक के सम्बन्ध में श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' का 'क्रांति की ज्वाला है-धधकते पृष्ठ' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें आपकी कविताओं के अनेक उद्धरण प्रस्तुत किये गये हैं, इन काव्यावतरणों ने पुस्तक के प्रति मेरी उत्सुकता बढ़ा दी है- तथा मुझे यह गर्व अनुभव करने को बाध्य कर दिया है कि मैं डॉ.वेद प्रकाश आर्य का सहाध्यायी हूँ। मैं भी राजा कालेज सीतापुर का उन्हीं दिनों का छात्र था, जब आप थे किन्तु आपने राष्ट्र और समाज की सेवा और उन्नति हेतु जो लम्बी छलाँग लगाई है, वह मुझे गौरवान्वित करती है तथा एक सुखानुभूति से भर देती है।

इसी अंक में आपका सम्पादकीय तो अद्भुत अपूर्व है। बलिदानी हुतात्माओं को लेकर आपने जो विचार प्रकट किये हैं, वे आपको कीर्ति और यश के सर्वोच्च आसन पर स्थापित करने के लिए पर्याप्त हैं। 'आर्य्य लोक वार्ता' के माध्यम से आप सच्चे अर्थों में ऋषि दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करने में संलग्न हैं। किन शब्दों में मैं आपको बधाई दूँ- यह निर्णय करना कठिन है। श्री महेश चन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.) भी लखनऊ विश्वविद्यालय में मेरे छात्रावास के अन्तःवासी थे। उनकी रचनाएँ पढ़कर मैं उल्लास से भर उठता हूँ। द्विवेदी जी तक मेरी शुभकामनाएँ पहुँचा दें।

*-गुरुप्रसाद मिश्र 'गांधी'*
*विजयलक्ष्मी नगर, सीतापुर, उ.प्र.*

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का २०वाँ पड़ाव अपूर्व सजधन के साथ मनाया गया, यह जानकर हर्ष हुआ, बधाई। आप की विभिन्न उपाधियों द्वारा राष्ट्र के उद्भट साहित्यकार महापुरुष सम्मानित हुए, धन्यवाद। प्रयाग में त्रिवेणी का संगम बेशक नाममात्र का है क्योंकि गुप्त गोदावरी की तरह सरस्वती कहीं अधिक वर्तमान में गोचर नहीं है, जबकि आपके द्वारा विचारधारा संगम- राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में विगत २७ मार्च २०१८ को लखनऊवासियों तथा बाहर से आये व्यक्तियों ने प्रत्यक्ष पाया, वह अपूर्व और अमिट छाप छोड़ गया। मैं पूर्व में बली प्रेक्षागृह में सम्पन्न कई समारोहों में शामिल हो चुका हूँ, किन्तु इस बार इतने विशाल ऐतिहासिक समारोह में अपने को न पाकर निराश होना पड़ा। मार्च-अप्रैल संयुक्तांक द्वारा ज्ञात हुआ कि पूर्व अंकों में दी गई सूचना के अनुसार सम्मान समारोह २७ मार्च ही नहीं, २ अप्रैल सोमवार को 'धधकते पृष्ठ' परिचर्चा के साथ पूर्णता को प्राप्त करता हुआ अपनी अमिट छाप छोड़ गया। आपको इस अपूर्व सफलता की प्राप्ति हेतु बधाई। इस बार के समापन समारोह में घर घर में जलती हुई दीपशिखा की तरह पूरे आर्यावर्त्त में आपकी धूम रही। आदरणीया वीना वर्मा जी ने अपनी व्यस्तता का अहसास कराया जिसे मैंने अनसुना कर दिया किन्तु इतना इंगित अवश्य कर देने को मैं आजाद हूँ कि आप अपने कार्यों को करने में अवश्य ही दूरदर्शी हैं किन्तु आपको कार्यक्रम पत्रक अवश्य ही हमारे पास भेजना था। उपयुक्त नाम के चयन और सटीक नाम के सृजन में आप अमृत पुत्र ही नहीं, माँ सरस्वती के वरद पुत्र हैं। श्रीमती डॉ.निष्ठा विद्यालंकार का उपदेश डालीगंज शताब्दी समारोह तथा आर्य समाज सदर के वार्षिकोत्सव में मैं सुन चुका हूँ, उन्हें 'वैदिक शारदीया' उपाधि से आपने नवाजा है, वह अपूर्व ही है। ऐसे ही श्री आनन्द कुमार आर्य तथा ठाकुर विक्रम सिंह के लिए 'जननायक' उपाधि का सृजन भी गरिमापूर्ण है, तथा आपकी क्षमता का परिचायक है।

*-बाँके बिहारी 'हर्ष'*
*अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

***

मई '१८ अंक पढ़ने से मुझे कई नवीन जानकारियाँ मिलीं। श्री आनन्द नारायण मुल्ला को एक अच्छे शायर, लेखक और न्यायमूर्ति के रूप में पहले से जानता था। उर्दू शायरी में गहरी अभिरुचि होने के कारण और इसलिए भी कि मेरे पिताजी श्री जब्त सीतापुरी (रामस्वरूप चौधरी) अपने जमाने के विख्यात शायर थे, मैं आनंद नारायण जी की अनेक रचनाओं से परिचित रहा हूँ किन्तु जो आखिरी वाकया 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित है, उससे अनजान था। आनंद नारायण के पिता श्री जगत नारायण के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। नई जानकारी बड़ी रोमांचक लगी। सचमुच, सोच समझ कर ही बयान देने चाहिए तथा कविता में संस्कारों की छाया पड़ने से समुचित निखार आता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि देश पर मिटने वाले हुतात्माओं के खून से बढ़कर संसार में कोई भी अन्य चीज नहीं है।

पूर्ववर्ती अप्रैल २०१८ अंक में 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१८' का विस्तृत विवरण और विवेचन अत्यंत हृदयग्राही है। विदुषियों में श्रीमती सुधा चौधरी, पूर्व प्राचार्या, आर्य कन्या महा-विद्यालय हरदोई का परिचय और सम्मान आह्लादकारी रहा। एतदर्थ, धन्यवाद।

*-कृष्ण स्वरूप चौधरी*
*विनीत खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ*

***

आपको अनेकों बधाईयाँ। सर्वप्रथम आपने आर्य लोक वार्ता का भव्य व सफल आयोजन किया जिसमें अनेकों माननीय विद्वानों विदुषियों को सम्मानित किया व स्मृति चिन्ह भेंट किये गये। अवश्य आर्य समाज में एक से एक विद्वान व कर्मठ लोग हैं जिन्हें राजनीति में आना चाहिए (ठा.विक्रम सिंह)। जैसे कभी प्रकाशवीर शास्त्री थे। आपने भी उनका स्मरण कराया है। इससे देश व राजनीति में ईमानदारी आयेगी। वास्तव में शास्त्रीजी सौम्य थे, विद्वान थे, वाणी में मिठास थी, कटाक्ष हृदयस्पर्शी होता था जिन्हें सुनने को डी.ए.वी.कालेज का विशाल मैदान भर जाता था। उन्होंने कहा था-'पाकिस्तान में बुर्का समाप्त है और यहाँ पर ऐसा बुर्का पहना जाता है जो सड़क साफ करता रहता है।'

प्रसन्नता का विषय है-कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि अयोध्या में महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन स्मृति में स्मारक एवं शोध अनुसंधान पीठ की स्थापना की जायगी। निवेदन है कि यह शुभ कार्य यथाशीघ्र प्रारम्भ हो जाय। डॉ. कन्हैया सिंह का छात्र न रहते हुए भी मैंने उनकी कर्मठता व व्यावहारिकता को देखा है जिन्होंने देशप्रेम को उभारने वाली कविताओं को पढ़ने गुनगुनाने की बात कही है तभी राष्ट्र निर्माता की उन्नति व समृद्धि में तेजी से विकास होगा। सम्पादक जी, आप और आप के 'धधकते पृष्ठ' के विषय में कई विद्वानों ने-डॉ.कन्हैया सिंह, अमृत खरे, डा.ऊषा सिन्हा ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। आजमगढ़ के डी.ए.वी. इण्टर में आप हमारे शिक्षक थे। आपके पढ़ाने की शैली बहुत ही प्रभावशाली रही है। महाकवि निराला पर आपने बहुत अच्छा नोट लिखाया था। उस समय आपका रोंगटे खड़े कर देने वाला ओजस्वी भाषण सुना था। आपने चाऊ एन लाई को ललकारा था...चौवन बार झूठ बोल चुका था...। उसके बाद २२ - २३ वर्ष बाद १९८५ में आपका दर्शन पेट्रोल पम्प पर हुआ और फिर आपके सम्पर्क में आता गया और मै जान सका कि आप मेरे गुरुजी हैं। दिन पर दिन ज्ञात होता गया कि आप प्रारम्भ से ही कितने कर्मठ, मेधावी व आर्य समाज को समर्पित हैं। आप जहाँ भी रहे, आर्य समाज की सेवा करते रहे। आर्य समाज के जलसों को 'ऑर्गेनाइज' व संचालन करने की बड़ी क्षमता है। 'धधकते पृष्ठ' की कविताओं को पढ़ते समय लगता है कि श्यामनारायण पाण्डेय को देख रहा हूँ जिन्हें दो-तीन बार सुन चुका हूँ। आपकी कविताओं में पूरा इतिहास समा गया है। उद्वेलित करने वाली पंक्तियां 'परिचय की बात न पूछो जलते हुए सितारों से, कितनी बाकी है रात न पूछो मैं उस धरती का प्यारा हूँ, मुझको यह धरती प्यारी है, इसके हर कण पर मयंक की सौ-सौ किरणें बलिहारी।'- नारी शक्ति को आपने जगा दिया-'कौन कह रहा तुमको अबला तू तो शक्तिस्रोत है नारी, तू ही विधि की सुघर दृष्टि है और भाव की कुंकुम क्यारी'। आपने खूब ललकारा है-'गा दो कवि ऐसा दीप राग, समता का फूटे किरण जाल, कुंठाएं कुंठित हो जाये जगमगा उठे भारती भाल।' 'ध्वंस जिसका कार्य उस शैतान को रहने न दूँगा, विश्व में नापाक पाकिस्तान को रहने न दूँगा'।

आपने एक-एक वीर, त्यागी, व विद्वानों को स्मरण कराया है। रचना को पढ़कर सुनने, सुनाने की इच्छा हो रही है। युवकों के सम्राट स्वामी विवेकानन्द का उत्कृष्ट वर्णन किया है जो चट्टान पर खड़े होकर भारतमाता को निहार रहा है।

*-शिशिर कुमार श्रीवास्तव*
*सी-335/2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016*

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के सभी अंक प्राप्त होते रहे हैं। मैंने नवम्बर '१७ अंक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित लेख को ध्यान में रखते हुए अपनी शुभाकांक्षा लिखी थी जो दिसम्बर'१७ अंक में प्रकाशित हुई थी। प्रधान सम्पादक महोदय को धन्यवाद। जनवरी, फरवरी व मार्च-अप्रैल अंक को पढ़ने के बाद मैं अपनी शुभाकांक्षाएँ नहीं लिख पाया। मई १८ के अंक में डॉ.चन्द्रपाल शर्मा जो एक क्रान्तिकारी विचारों वाले साहित्यकार, समाजसेवी व वैदिक विद्वान हैं, की शुभाकांक्षा को पढ़कर मैं आश्चर्य चकित रह गया। अन्य पाठकों को धन्यवाद देने के साथ साथ उन्होंने मेरी शुभाकांक्षा के अन्तर्गत विचारों, चिन्ताओं को ध्यान से पढ़कर मेरी सराहना भी की। मैं डॉ. शर्मा को नमन करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। मैं उनसे दूरभाष पर व पत्रों द्वारा अपनी शेष जिज्ञासाओं का समाधान भविष्य में करता रहूँगा।

फरवरी अंक के अन्तिम पृष्ठ पर होली के पावन पर्व पर जो प्रधान सम्पादक जी ने कुछ विशेष व्यक्तियों साहित्यकारों, पाठकों को अलंकरण दिये हैं उन्हें सबने सराहा था। इसी फरवरी अंक में जिज्ञासा और समाधान स्तम्भ में कुछ लम्बित जिज्ञासाओं का समाधान भी किया है, मैं आभारी हूँ। पृष्ठ ३ पर अक्षर लोक स्तम्भ में वैदिक विद्वान श्री अमृत खरे जी ने 'चिन्तन की मणियाँ' रचनाकार डॉ.चन्द्रपाल शर्मा जी के ग्रंथ की बहुत ही सुन्दर शैली में समीक्षा करके सभी पाठकों पर उपकार किया है। मूल प्रति तो पता नहीं हम जैसे पाठकों को कब प्राप्त होगी, कब क्रय कर पायेंगे परन्तु फिलहाल श्री खरे जी के परिश्रम के फलस्वरूप जो नवीन ज्ञान व प्रेरणा प्राप्त हुई है वह अमूल्य है। मई अंक में ही डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी के अनुपम लेख 'व्यक्ति विशेष' मेरी ८२वीं जन्म वर्षगांठ पर जो प्रकाशित किया है उसे पढ़कर बहुत से पाठकों हमारे मित्रों ने सराहना की है। डॉ.आर्य जी का मैं आभारी हूँ। इसी अंक के सम्पादकीय में जो देशप्रेम की भावनाएँ व्यक्त की गई हैं उदाहरण देते हुए उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम होगी। मैं आर्य लोक वार्ता के चतुर्दिक विकास के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

*-पाल प्रवीण*
*एम.एस.120, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ*

***

'आर्य लोक वार्ता' का मार्च-अप्रैल संयुक्तांक प्राप्त हुआ जो नवीन साज सज्जा से युक्त पूर्ण रूपेण नये परिवेश में दृष्टिगोचर हुआ। २७ मार्च को स्थानीय राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में आयोजित 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' की विस्तृत कार्यवाही का इसमें दिग्दर्शन कराया गया है। प्रत्येक पृष्ठ पर बहुरंगे चित्र इसकी शोभा वृद्धि में चार चाँद लगाते हैं। कई लोगों के जैसे महेश चन्द्र द्विवेदी, डॉ.कन्हैया सिंह, इं. जे.पी.अग्रवाल व आनन्द कुमार आर्य के परिचय भी दिये गये हैं। कार्यक्रम में लोकार्पित डॉ.वेद प्रकाश आर्य की काव्य कृति 'धधकते पृष्ठ' पर अमृत खरे व महेशचन्द्र द्विवेदी इत्यादि की समीक्षायें भी अच्छी और उपयोगी हैं। कुल मिलाकर अंक अच्छा है।

*-दयानन्द जड़िया 'अबोध'*
*हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-226003*

***

'आर्य लोक वार्ता' का मई '१८ अंक देखने को मिला। प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित 'नापाक मनोवृत्ति आज भी जिन्दा है'- आर्य नेता स्व.प्रकाशवीर शास्त्री का १९५२ में लिखित आज भी सम सामयिक प्रतीत होता है। ऐसे सुंदर लेखों के प्रकाशन हेतु सम्पादक महोदय को जितना धन्यवाद दिया जाय, कम है। 'अतुलनीय है शहीदों का रक्त' शीर्षक सम्पादकीय तो अद्भुत और बेजोड़ है, हिन्दी के किसी भी साप्ताहिक या दैनिक पत्र में इस कोटि के विचारपूर्ण और खोजपूर्ण लेख देखने को नहीं मिलते। शास्त्रार्थ महारथी पं.रामचन्द्र देहलवी के लेखों का तो कहना ही क्या? मेरा समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि अमान्य पत्रों पर अपना धन और समय व्यर्थ न करें। जो कुछ करना है, वह 'आर्य लोक वार्ता' के हितार्थ करें। सरयू बाग अयोध्या में वेद भाष्य स्मारक का समाचार भी आर्य लोक वार्ता में ही दृष्टिगोचर होता है।

*-प्रेमचन्द्र शर्मा*
*बहादुर पुर, कुर्सी रोड, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता मई अंक में आर्य विद्वान् पं.प्रकाशवीर शास्त्री का भारत विभाजन पर केन्द्रित आलेख सत्यान्वेषी एवं क्रांतिदर्शी है। यथार्थ के उद्घाटन से हृदय उद्वेलित हो उठता है किन्तु भारत विभाजन की त्रासदी कतिपय अहंमन्य स्वार्थलोलुप राजनेताओं की दूषित मनोवृत्ति का कुफल ही है जिसके लिए आने वाली पीढ़ियां अभिशाप भोगने के लिए विवश हैं। अब केवल एक समधान शेष है, खण्डित भारत को पुनः भारत में संयुक्त करके भारतवर्ष का गौरव वापस पाना। यह लक्ष्य दुरूह है किन्तु असम्भव नहीं। सम्पादकीय चिन्तन में शहीद के लहू और लेखनी की मसि दोनों का मर्यादित महत्व रेखांकित किया गया है, आपकी लेखनी ने चाटुकार शायरों की अच्छी खबर ली है। अत्यंत वीरोचित, सटीक और समसामयिक है आपकी विद्वत्तापूर्ण प्रतिक्रिया। आपकी लेखनी को नमन। पत्र में महाशय आनन्द भण्डारी तथा श्री पाल प्रवीण का प्रेरक व्यक्तित्व कृतित्व आर्य संस्कार को जीवंतता प्रदान करता है। शुभाकांक्षा में 'धधकते पृष्ठ' कृति के विषय में प्रस्तुत मेरे विचारों को पूर्ण रूपेण स्थान मेरे लिए हर्ष मिश्रित गौरव की अनुभूति कराता है। अन्य सुधी पाठकों की प्रस्तुतियाँ भी प्रशंस्य हैं। महाराणा प्रताप जयंती को सार्थकता प्रदान करती श्रीश्यामनारायण पाण्डेय चित्तौड़ दर्शन अनूप शर्मा की रचनाएँ हृदयग्राही लगीं। डॉ.शितिकण्ठ, डा.कैलाश निगम, राजाभ, रामा आर्य 'रमा' आदि सुकवियों की भावपूर्ण कविताओं ने मन मोह लिया। पत्र में चयनित विषयवस्तु से 'गागर में सागर' उक्ति चरितार्थ होती है। आपके शब्दानुष्ठान की श्रेष्ठ कामना सिद्ध सफल हो, ऐसी शुभासा में-

'आर्य लोक वार्ता' पत्र का, अंक प्रत्येक विशेष है।
सुसंस्कृत आलेख-काव्या में, ऊर्जा निहित अशेष है।
जन-जन बनें 'विनम्र' आर्य, देता यही संदेश है।
धरती पर ही स्वर्ग बसाने की सुकामना शेष है।।

*-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'*
*117, आदित नगर, विकास नगर, लखनऊ*

***

धारावाहिक-(83)

# मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

दूसरों की दृष्टि में ऐसे लोग मूर्तिमान् संकट या वसन्त ऋतु के उल्लू अर्थात् उल्लू-वसन्त जैसे लगते हैं। यदि कोई आपका बहुत आदर करता है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि आप उसका जितना समय चाहें ले सकते हैं और जब चाहें उसके काम में बाधा पहुँचा सकते हैं। यह अनुचित और अप्रतिष्ठाजनक है। किसी घनिष्ठ मित्र के यहाँ भी यदि आप बेमौके पहुँच जाएँगे तो वह हृदय से आपका स्वागत नहीं करेगा। कोई भी असामयिक कार्य उचित नहीं मान जाता। समयोचित आचार-विचार का ध्यान रखिये।

(३) मित्रों को तंग करना- बहुत से लोग अपने मित्रों को अपनी बुरी आदतों और कमजोरियों से बहुत तंग करते हैं। जिस काम को वे स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए भी वे मित्रों की सहायता पर अवलम्बित रहते हैं और उसके लिये उनके सिर पर सवार रहते हैं। उनकी दृष्टि में उनके मित्र बिना वेतन के नौकर होते हैं। ऐसे व्यक्तियों से कौन नहीं परेशान होगा।

मित्रों को लोग अन्य प्रकार से भी तंग करते हैं। जैसे-उनकी व्यक्तिगत घरेलू बातों में पड़ना, उनके कमरे में जाकर उनकी अनुपस्थिति में उनकी तलाशी लेने लगना; अर्थात् उनकी चीजों को अकारण उलट पलट कर देना, बिना पूछे उनकी वस्तुओं का उपयोग करना, उनके बिस्तरे पर लेट जाना, उनके भीतरी कमरे में झाँकना और जहाँ चाहे धड़धड़ाते हुए चले जाना, यदि वे घर के भीतर हों तो बाहर से भद्दी-भद्दी बातें करना, उनकी बैठक में इस तरह चहकना, खिलखिलाना और गजल गाना कि भीतर की स्त्रियाँ भी सुन सकें और जब देखिये तब उनके यहाँ पहुँचे रहना। ऐसी बातों से मित्रगण तंग आ जाते हैं और आपने असावधान मित्र से घृणा करने लगते हैं। अपने मित्र के लिये एक रोग नहीं बनना चाहिये। इस बात का सदा ध्यान रखिये कि आप किसी प्रकार अपने मित्र की प्रसन्नता में बाधक तो नहीं हो रहे हैं?

(४) टीमटाम में पड़े रहना:- बहुत से लोग ऐसे हैं जो ऊपरी टीमटाम में ही पड़े रहते हैं और असली काम को भूल जाते हैं। किसी अतिथि के आने पर वे उसे चुपचाप बैठा देते हैं और स्वयं खिलाने पिलाने की चिन्ता में इधर उधर दौड़ने लगते हैं। उनकी परेशानी देखकर ऐसा लगता है मानो उनके घर में मेहमान के रूप में कोई बला आ गई है। अतिथि अपने कारण उनकी असुविधा का अनुभव करके कष्ट ही पाता है। उनकी जिस सज्जनता और प्रीति के लिए वह आता है, उसे वह नाममात्र को मिलती है। गृहस्थ जी को इतना अवकाश कहाँ कि थोड़ी देर बैठ कर प्रेम से बातें करें! वे तो 'यह लाओ, वह लाओ' के चक्कर में पड़े रहते हैं। उनकी टीमटाम से अतिथि का पेट भले ही भर जाय, हृदय सन्तुष्ट नहीं होता।

यह तो एक उदाहरण है। इसी प्रकार अन्य कार्यों में भी बहुत ऊपरी बनावट अच्छी नहीं लगती। उससे लोगों को स्वभावतः अरुचि हो जाती है। नकली बड़प्पन की अपेक्षा आपका प्रेम कहीं अधिक मूल्यवान है। उसकी का प्रदर्शन और उसी का दान अधिकाधिक मात्रा में करके आप दूसरों को प्रसन्न कर सकते हैं। बिना प्रेम का खिलाना-पिलाना किस काम का! वह तो होटल वाला भी आपसे अच्छा कर सकता है। आपका प्रेम मुख्य है। उसके साथ आप किसी को एक छोटी सी इलायची भी दे दें तो वह रत्न बन जाती है।

(५) बुरा मान जानाः- जल्दी-जल्दी बुरा मान जाना भी एक बुरी बात है। कुछ लोगों को दूसरों की हर एक राय बुरी लगती है। कोई अपने प्रस्ताव का उचित विरोध करे और उनकी भूलों की ओर उनका ध्यान दिलाये या अच्छा सुझाव दे तो भी वे चिढ़ जाते हैं। इसका कारण है-अहंकार। अहंकार-वश ऐसे लोग शुभ सम्मति को भी अपनी आलोचना एवं अपने व्यक्तित्व पर आक्रमण मानते लेते हैं। यह प्रवृत्ति व्यवहार में बाधक होती है। कुछ लोग अशिक्षितों के बीच किसी नवीन स्थान पर जाने पर यदि योग्य रीति से सम्मानित नहीं होते तो बुरा मानकर दूसरों को बुरा-भला कहने लगते हैं। यह भी एक भूल है। इससे समझ लेना चाहिये कि आपका सत्कार वही कर सकता है जो आपके गुणों से परिचित हो। तुलसीदास ने कहा है-'जाने बिनु न होइ परतीती; बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती'-मानस। इस मनोवैज्ञानिक रहस्य को समझ लीजिये तो आपको अनाड़ियों की उपेक्षा की परवाह नहीं होगी। मान-लोलुपता स्वयं अपमानजनक है।

(६) सर्वत्र चतुराई दिखानाः- चतुराई से काम लेना एक गुण भी है, परन्तु सर्वत्र नहीं। बहुत-से लोग घर में और मित्र-मंडली में भी बुद्धि की चालें चलते हैं और कृत्रिम प्रेम से स्वजनों को अधिकाधिक रिझाने या मूर्ख बनाने में अपनी सफलता समझते हैं। वे घर वालों को भी दावपेंच से अपनी मुट्ठी में रखना चाहते हैं। परिणाम होता है-गृह-दाह। अपनी दुरंगी चालों से वे अपने ही आदमियों का प्रेम और विश्वास खो देते हैं। जहाँ प्रीति से ही काम लेना चाहिये, वहाँ नीति का प्रयोग करना वैसा ही है जैसे आँख के सुरमे की जगह लाल मिरचों का चूर्ण लगाना। हृदय के साम्राज्य में बुद्धि का अधिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये।

(७) बहुत सरल, शान्त और मृदु होनाः- व्यावहारिक जीवन में अत्यंत सरल, शान्त और मृदु होना भी बुरा है। इसलिये बुरा है कि इससे दुष्टों को स्वेच्छाचार करने का मौका मिलता है। वे भले आदमियों की साधुता का लाभी लेते हैं। समाज में दुर्जनों की प्रबलता सज्जनों की सरलता और मृदुता के कारण बढ़ती है। जो व्यक्ति अधिक मृदु होता है, उसे कोई भी जैसा चाहता है, मोड़कर अपना काम निकाल लेता है। जो सबकी सहायता करने को तैयार रहता है, उसका लाभ शठ लोग ही सबसे पहले दौड़कर लेते हैं। जो बहुत शान्त रहता है, वह तो कापुरुष मान ही लिया जाता है। उस मनुष्य की मूर्ति को लोग पूजा भले ही करें, उसे और किसी का नहीं समझते। संसार में आवश्यकता से अधिक सरल, शान्त और कोमल नहीं होना चाहिये।

ऊपर हमने मनुष्य की कुछ छोटी-बड़ी त्रुटियों का विवरण दे दिया है। इन्हें आप दूसरों में बड़ी सुगमता से ढूंढकर पकड़ लेते हैं। अधिक अच्छा यह होगा कि इन्हें अपने स्वभाव और चरित्र में से भी खोजकर निकालिये। दूसरों पर तो आप बराबर दृष्टि डालते ही हैं, कभी कभी अपने ऊपर भी एक दृष्टि डालना न भूलिये। दूसरों के रोग की अपेक्षा आपका रोग अधिक कष्टदायक हो सकता है। उसकी उपेक्षा मत कीजिये।

*(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)*

व्याख्यान माला (5)

# ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

जो स्वतंत्र जीवात्माएं हैं वे स्वतंत्रतापूर्वक अपना कार्य कर रही हैं। परमात्मा ने कहा 'शादी करना चाहते हो तो शादी कर लो। गृहस्थ आश्रम का पालन करो। समाज की व्यवस्था हम करेंगे। तीन फैक्ट्री होंगी जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तैयार किये जायेंगे। जिन्होंने ब्राह्मण के गुण हासिल किये हैं वे ब्राह्मण बनेंगे, जिन्होंने क्षत्रिय के वे क्षत्रिय बनेंगे और जिन्होंने वैश्य की योग्यता हासिल की है वे वैश्य बनेंगे। ये तीन फैक्ट्री होंगी जिसके अन्दर ये तीन प्रकार के मनुष्य तैयार होंगे। यह हो सकता है कि उन्नति करके कोई मनुष्य वैश्य से क्षत्रिय या क्षत्रिय से ब्राह्मण बन जाए। यह भी हो सकता है कि अवनति हो जाए और ब्राह्मण से क्षत्रिय या क्षत्रिय से वैश्य बन जाए। यह हमारे व्यवहार से भी होता है। मास्टर बच्चों को पढ़ाता है। उन पढ़ाये हुए बच्चों में कुछ ऐसे होते हैं जो नीची कक्षा के योग्य हों जिन्हें नीची कक्षा में छोड़ना पड़े क्योंकि वे उस कक्षा के योग्य नहीं हैं। मनुष्य की व्यवस्था में भी यह होता ही है, कोई नई बात नहीं है। भगवान की भी यही व्यवस्था है। ब्राह्मण अधिक से अधिक कोशिश यह करेगा कि उसका बेटा ब्राह्मण बने, क्षत्रिय चाहेगा कि क्षत्रिय बने और वैश्य भी वैश्य ही बनाना चाहेगा। किन्तु अगर किसी में अधिक योग्यता है तो वह ऊँचा जा सकेगा। वह रोकने की चीज तो नहीं है।

प्रत्येक खानदान में एक दूसरी चीज भी हो रही है। तीन पैमाने वैदिक सभ्यता के बन रहे हैं। मां, बहन और बेटी के तीन पैमाने जो बड़े सच्चे व सही पैमाने हैं, आर्य परिवारों में तैयार हो रहे हैं। क्या वहां उनकी पवित्रता में कोई शंका हो सकती है? अगर भाई अपनी बहन से बातें कर रहा है, क्या कोई शंका करता है? बेटा अपनी मां से और बाप अपनी बेटी से जब बातें करता है तो क्या कोई शंका करता है? क्या किसी को कोई शक होता है? बिल्कुल नहीं होता। क्यों नहीं होता? वे बिल्कुल पवित्र स्थान हैं, वहां रिश्ते की इतनी पवित्रता है कि किसी को शक की गुजाइश नहीं है। मां, बहिन और बेटी के सच्चे पैमाने जो व्यवहार में आने हैं उनका निर्माण हो रहा है परिवारों में।

परिवारों में इस सच्चे पैमाने का निर्माण ईश्वर की ओर से क्यों स्थापित किया गया? इसलिए कि तुमको अपने घर से बाहर जाकर Society(सोसाइटी) Move (मूव) करना है। वहां तुम्हें तुमसे गैर औरतें मिलेंगी। जो तुम्हारे खानदान की न होंगी, न तुम्हारी रिश्तेदार होंगी, न तुम्हारी बिरादरी की होंगी और तुम्हें उनके बीच में काम करना पड़ेगा। वे तुमसे छोटी होंगी, तुम्हारी बराबर की होंगी और तुमसे बड़ी होंगी। इन तीनों के साथ कैसा व्यवहार करना है यह परिवारों में बताया गया है। ये पैमाने ऐसे हैं जिनमें कोई Impurity (इम्प्योरिटी) अपवित्रता नहीं है। ये पैमाने अपने खान ए दिल में रखकर के जाओ और बाहर जाकर यदि अपने से बड़ी स्त्री हो तो उसे माता तुल्य समझो और यदि छोटी हो तो अपनी बेटी के तुल्य समझो। उन्हीं तीन पैमाने से उन्हें नाप लो। अपने हृदय को पवित्र रखो और उनके कार्यों में सहायक होकर उनके मार्गों को सुरक्षित बनाओ, उन्हें प्रशस्त करो। आज प्रत्येक पिता अपनी पुत्री को कहीं अकेला भेजने में शंका करता है क्योंकि पैमाने गलत होते जा रहे हैं। इन पैमानों को बिगाड़ने में सिनेमा मुख्य कारण है। यह मैंने ही अनुभव नहीं किया है जो सिनेमा प्रबंधक हैं और विचारशील पुरुष हैं वे भी यही कहते हैं। मैं एक बार हापुड़ जा रहा था। उसी डिब्बे में एक और साहब भी थे जो सिनेमा का सामान लेकर देहरादून जा रहे थे। वे मेरे वाकिफ थे मुझे कहीं उन्होंने देखा था। मुझे देखने पर उन्होंने नमस्ते की। मैंने पूछा, 'कहिए क्या ले जा रहे हैं?' कहने लगे पंडित जी क्या बतायें आपसे कहने में शर्म आती है। वे कुछ चलचित्रों की प्रशंसा कर रहे थे और सिनेमा के बारे में ही बातें हो रही थीं। मैंने उनसे बीच में ही पूछा कि बताइये सिनेमा द्वारा आपने समाज की क्या सेवा की है? क्या अच्छा जवाब दिया है उन्होंने- कहने लगे 'पंडित जी आपसे क्या छिपाना है, बिल्कुल सच कहूंगा। हमने आज भाइयों को भी अपने खानदान में ऐतबार के लायक नहीं रखा है। सिनेमा का इतना जोरदार प्रचार किया है हम लोगों ने कि मनोवृत्तियां लोगों की बिगाड़ दी हैं। ये अत्यन्त दूषित हो चुकी हैं।' मैं चुप हो गया क्योंकि उन्होंने ठीक बात कह दी। विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं रही है यह स्थिति है। भाई की वृत्ति भी इतनी बिगड़ चुकी है। पैमाने की वह पवित्रता, जिसका मैंने जिक्र किया था, वह समाप्त हो गई है। इस प्रकार की अनेक खराबियां आज आप अपने समाज में देख सकते हैं। भगवान ने इन्हीं खराबियों को रोकने के लिए खानदानों में तीन पैमाने तैयार किये थे। बहन भी होगी, भाई व बाप भी होंगे और धर्मपत्नी भी होगी। और सब साथ रहते हैं। इनकी अपवित्रता के बारे में किसी को संदेह नहीं होता।

एक बार बाजार में भाई और बहिन बातें कर रहे थे। उम्र का थोड़ा ही फर्क था। किसी ने कहा- 'कितने बेहूदे हैं, बातें बाजार में कर रहे हैं खड़े होकर, न जाने कौन हैं कौन नहीं!' उनको वहां जानने वाला एक आदमी था। उसने कहा, 'तुम्हें मालूम नहीं! ये दोनों भाई बहिन हैं। अपने स्कूल से पढ़कर आये हैं और घर जा रहे हैं।' उसने कहा, 'अच्छा यह बात है तो कोई हर्ज की बात नहीं है।' तबियत से खयाल हट गया। भाई बहन कहने का मतलब यह है कि वहां अपवित्रता है ही नहीं। वह तो परिवार का अंग है। जो कि आनन्द धाम है। वह ऐसा Retreat (रिट्रीट), आश्रम है जहां यदि आदमी के जजबात भड़के हुए भी हैं तो घर में आकर शांत हो जायेंगे या उनको शान्त करना पड़ेगा। इसलिए जीवन में शान्ति बनाए रखने के लिए हमें उन पैमानों को सच्चा रहने देना चाहिए। जिससे कि हम जब समाज में कार्य करने निकलें तो हमारे कार्य से या व्यवहार से समाज की शान्ति भंग न हो जाए। अमन कायम रहे। तब यह दुनिया स्वर्ग हो जाएगी।

'य आत्मदा बलदा' इस मंत्र के अनुसार जिसने अपने को समझ लिया है वह गलत काम कर ही नहीं सकता। जोशी अस्पताल में जहां मेरा आपरेशन हुआ था तो डाक्टर ने मुझे वहां घूमने के लिए कहा। मैं निकट के अजमल खां पार्क में घूमने जाया करता था। वहां मैं कुछ देर बैठता था। लोग प्रश्न पूछा करते थे। एक दिन, एक सज्जन पुरुष ने मुझसे पूछा कि 'क्या मांस खाने वाला महात्मा हो सकता है?' मैंने कहा, 'बिल्कुल भी नहीं।' क्योंकि उसने अपनी आत्मा की बेइज्जती की है, आत्मा क्या कभी चाहती है कि कोई उसे मार दे? प्रत्येक आदमी अपनी रक्षा करना चाहता है। एक बार किसी नदी के किनारे- याद न रहा कि गंगा थी या यमुना- किसी ने यह शोर मचा दिया कि 'नदी में पानी बढ़ रहा है'- वहां हजारों आदमी स्नानार्थ गये थे- वहां इतना सुनकर लोगों में कैसी भगदड़ मची। लोग अपनी अपनी जान बचाने के लिए बेतहाशा भागे। कुछ पता ही नहीं चला कौन कहां चला गया। कोई दब गया, कोई मर गया। किसी का बच्चा छूट गया, किसी का सामान छूट गया। एक भयंकर स्थिति व दृश्य उपस्थि हो गया जरा सी देर में। ये सब क्या था- आत्मरक्षा का प्रयत्न। 'मया जार मोरे कि दाना कशस्त कि जांदारदो जानशीरी तर अस्त' इसका अर्थ यह है कि चींटी को न सता कि जान रखती है और जान सबसे प्यारी चीज है। जान तो सभी को प्यारी है तो जिसने यह समझ लिया कि मेरी जान मुझे प्यारी है तो अन्य को भी वैसी ही होगी। फिर क्या वह दूसरी जान को मारेगा? अगर वह दूसरी जान को मारत है तो स्पष्ट है कि वह अपनी आत्मा की बेइज्जती करता है। इस प्रकार का आदमी महात्मा कैसे हो सकता है? वह साधारण आत्माओं की कोटि में भी नहीं आता, वह पतितात्मा है। क्योंकि वह ऐसा काम करता है जो उसे नहीं करना चाहिए।

किसी को दण्ड देना और चीज है। दण्ड सुधार के लिए है। लेकिन जो लोग अपनी जबान के जायके के लिए, दूसरों के गोश्त से अपने को मोटा बनानेके लिए जीवों की हत्या कर देते हैं, वे पापी हैं। ऐसा उनको नहीं करना चाहिए।

'य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः' यस्य प्रशिषं विश्वे देवा उपासते- जिसके शासन को, जिसकी शिक्षा को सभी विद्वान् लोग स्वीकार करते हैं। कोई ऐसा विद्वान नहीं है जो उसके नियमों को स्वीकार न करता हो चाहे वह खुदा को मानता हो या न मानता हो। वह यह कह सकता है कि मैं ईश्वर को नहीं मानता किन्तु उसके शासन से इन्कार नहीं कर सकता। जो आदमी शासन को मानता है शासक को नहीं मानता, इन्तजाम को मानता है, मुन्तजिम को नहीं मानता, उसमें अभी आधी बेवकूफी मौजूद है। क्योंकि दुनियां में क्या कोई इन्तजाम बगैर मुन्तरिम के हो सकता है? क्या कोई शासन कभी बगैर प्रशासक के हो सकता है? एक सज्जन मुझसे कहने लगे कि 'हमारे जो Prime Minister साहब हैं वह गांधी जी की सोहबत में रहकर भी ईश्वर को नहीं मानते हैं। मैंने पूछा 'इन्तजाम को मानते हैं कि नहीं?' कहने लगे 'इन्तजाम को मानते हैं।' तो मैंने कहा 'अभी उनका ज्ञान पूरा नहीं है, इस सम्बन्ध में (ईश्वर के सम्बन्ध में) वे पूरे वाकिफ नहीं कहे जा सकते। इसलिए आधे नावाकिफ कहे जायेंगे। चाहे कितने ही बड़े क्यों न हों। इस बारे में हमें स्पष्ट कहना पड़ेगा जो इन्तजाम को माने और मुन्तजिम को न माने तो वह शख्स पूरे ज्ञान की बात नहीं करता। *(क्रमशः)*

## काव्यायन

### 'धधकते पृष्ठ' काव्य के प्रति

❑जयप्रकाश शुक्ल

जब अरि की सेना चुपके से
सरहद में घुसकर बढ़ आई।
जब भारत की सीमाओं पर
दुःख की काली बदली छाई।।

कर ध्वस्त शत्रु की टैंकों को
सेना जयगान गा रही थी।
उस समय 'धधकते पृष्ठों' की
यह गाथा लिखी जा रही थी।।

शब्द धधकते पर इसमें
हैं धधक रहे अंगार छिपे।
कश्मीर धरा पर महक रहे
वे मनमोहक शृंगार छिपे।।

इन्हीं धधकते पृष्ठों में
मर मिटने का अरमान छिपा।
वीरों का साहस शौर्य छिपा
बालाओं का सहगान छिपा।।

मरदानी रानी लक्ष्मी का
इसमें स्वर्णिम इतिहास छिपा।
अबला नारी के जीवन का
है साहस शौर्य विकास छिपा।।

कश्मीर देश की धरती है
तो प्रकृति यहाँ मुसकाती है।
यह लेखन कवि की घड़कन है
हर कविता यही बताती है।।

धधक रहे इन शब्दों में
हैं छिपे हुए बहुमूल्य रत्न।
निद्रा से उठकर जागो तुम
मत देखो कोई अन्य स्वप्न।।

और धधकते शब्दों में
है गुंथी हुई सुन्दर माला।
मोती मणियों से सजी हुई
धरती माता की वरमाला।।

माँ के स्मृति चरणों में
है अश्रु रवानी छिपी हुई।
ममता मय सुखरानी की
दुख भरी कहानी छिपी हुई।।

और धधकते शब्दों की
यह ज्वाला घर घर पहुँचे।
भारत माँ के प्रति अमिट प्रेम
ममता श्रद्धा भर कर पहुँचे।।

*–55/1624, सेक्टर–एच, एलडीए कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ*

### सिद्ध लाभप्रद योग

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

मन–शरीर का संतुलन, कहलाता है योग।
प्राकृतिक अभ्यास से, दूर भगाएं रोग।।

योग–ध्यान–व्यायाम से होता स्वस्थ शरीर।
चिंता और तनाव की, मिट जाती है पीर।।

जमे नियंत्रण स्वयं पर, तन–मन होता स्वस्थ।
सक्रियता की वृठि से, रहते कष्ट तटस्थ।।

योग दिवस से विश्व में, मिला योग को मान।
फिर क्यों वंचित लाभ से, सोचें! चतुर सुजान।।

योग दिवस के रूप में, विश्व मनाता पर्व।
दिवस जून इक्कीस पर, भारत का है गर्व।।

प्रतिदिन नियमित कीजिए, सफल योग–अभ्यास।
रोग–मुक्ति हित है सुलभ, सहज सुरम्य प्रयास।।

धर्म–पंथ से है परे, योग–क्रिया का ज्ञान।
स्वास्थ्य–सुजीवन से जुड़ा, योगासन–विज्ञान।।

*–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–22*

ऋतु वर्णन

### आषाढ़

❑रामा आर्य 'रमा'

गया जेठ जेठी भई, आया माह आषाढ़।
वर्षा ऋतु का आगमन, पर्वो की है बाढ़।।

कृषक 'रमा' है मगन मन, नभ में घटा निहार।
बोएं फसल खरीफ की, धरती का उपहार।।

जल बरसाये आदरा, असरेखा की मार।
घटा घिरी घनघोर है, कब बरसे जल धार।।

कोकिल बैठा मौन हो, दादुर का है शोर।
वन की देख हरीतिमा, मगन नाचते मोर।।

संस्कृति में अपनी 'रमा', गुरु का पर्व महान।
करें अषाढ़ी को सभी, गुरुओं का सम्मान।।

*('रमा सतसई' से)*

*–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ*

### नाश करो

❑डॉ. कैलाश तिगम

सम्प्रदायवाद, साम्यवाद
या समाजवाद
चाहता है अवसर
फिर से मनन का।
देश में रहे हैं पल,
सबको रहे हैं खल
ऐसे देशद्राहियों के
वंश के दलन का।
शान्ति, सद्भाव, एकता का
पथ भूलने से
मार्ग अवरुद्ध हुआ
नूतन सृजन का।
डस रहा देश को है
भोगनीति वाला साँप
नाश करो एक–एक
दन्त और फन का।

*–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ*

### योग दिवस २१ जून

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

बनता है हरि कृपा से, जीवन में संयोग।
स्वास्थ्य हेतु प्रेरक मिले, जो बतलाये योग।।

जन आन्दोलन बन रहा, आज योग अभियान।
लाभ उठा जग कर रहा, भारत का गुणगान।।

योग शुद्ध विज्ञान है, ऋषियों का वरदान।
यह अभेद निःशुल्क है, सहज सुलभ अवदान।।

सूर्योदय से पूर्व उठ, जो करता नित योग।
बेहतर ढंग से कर सके, जीवन का उपयोग।।

जो तनाव में जी रहा, लिये कदर्थ विचार।
है उसके शुभ स्वास्थ्य हित, योग सरल उपचार।।

करे चिकित्सा शास्त्र भी, महिमा को स्वीकार।
कई रोग का योग से, बिना शुल्क उपचार।।

*–616/227, बसंत विहार, निकट विश्वनाथ पार्क, लखनऊ–21*

## हर्ष–चतुष्पदी

### यज्ञ की विभूति

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

यज्ञ की राख किसी भस्म से कम नहीं।
जहाँ है यह राख वहाँ कोई गम नहीं।
पवित्र इस राख को दवा और दुआ मानें।
यज्ञ की राख जहाँ, वहाँ कोई सितम नहीं।

वनस्पतियों के लिए सोने में सुहागा है।
यज्ञ करने में किया जिसने नहीं नागा है।
चिकित्सा विज्ञान ने भी यज्ञ को स्वकारा है–
जो है नर्क, बने स्वर्ग, यही यज्ञ का इरादा है।

*–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

## कालजयी काव्य

### कलम, आज उनकी जय बोल!

❑रामधारी सिंह 'दिनकर'

जला अस्थियाँ बारी–बारी
चटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल!

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल–जलकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल!

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल!

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल!

### वीर योद्धा राजा गुलाबसिंह बेरुआगढ़ी

❑पं.राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

शत्रु दल सुनत उमंग मढ़ि आयो उर
रोष बढ़ि आयो अंग वीरता अकूती मैं।
शस्त्र गहि आपने सनेहिन को संग करि
आगे कढ़ि रोक्यो है ब्रजेश मजबूती मैं।
बेरुवा गढ़ी के आस पास रुंड मुंडन कै
कीन्हो घमसान है समान पुरुहूती मैं।
पाल्यो बीरता को प्रण धीरता निबाहि चाहि
शान श्री गुलाबसिंह राख्यो रजपूती मैं।।

बीरता को दान सनमान सान साहिबी सों
राजभक्ति भक्ति मंजु मानस मढ़ी भई।
धर्म शरणागत को पालिबो ब्रजेश फल
बेगम स्वराज साधना सों जो बढ़ी भई।
तोख्यो रणचण्डी को स्वतंत्रता की बेदी पाय
भेंट दै अरातिन की सेन जो चढ़ी भई।
भूप श्री गुलाबसिंह जू सों यजमान धीर
बीरयज्ञ–भूमि बीर बेरुवा गढ़ी भई।

*(ब्रजेश–विनोद' से)*

### जल है जीवन

❑रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'

जल के संरक्षण का भाई, भी तुम उपाय कर लो।
जहाँ कही मिल जाये पानी, मत बहने दो भर लो।।

गिरता जल का स्तर प्रतिदिन, खतरे की घंटी है।
कोड़ा कठिन लगेगा आगे, अभी लगी संटी है।।

जल से जीवित हैं नदियाँ यह, झरने जीवित जल से।
जल से सजी हुई यह धरती, भरी फूल से फल से।।

अपने बाग बगीचे सुन्दर, सुन्दर अपनी क्यारी।
अपनी सारी फसलें रहतीं, इस जल की आभारी।।

*–औद्योगिक क्षेत्र, सण्डीला, जिला–हरदोई–241127*

राजस्थान-समाचार

## अंधविश्वास, पाखण्ड फैलाने वालों पर आर्य समाज ने की सख्त कार्यावाही की माँग

कोटा, ४ जून। जिले के प्रमुख सरकारी अस्पतालों ने आत्मा ले जाने के नाम पर होने वाले टोने-टोटके एवं तंत्र-मंत्र को रोकने तथा ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने की माँग को लेकर आर्य समाज ने जिला कलेक्टर महोदय कोटा का ज्ञापन सौंपा। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता चेयरमैन कृष्णा ब्लड बैंक, प्रेमनाथ कौशल आर्य समाज भीमगंजमण्डी, आर्य समाज रामपुरा के उपमंत्री प्रभुसिंह कुशवाह, आर्य समाज तलवण्डी से वेदमित्र वैदिक ने जिला कलेक्टर कोटा शहर से मिलकर ऐसे अंधविश्वास, पाखण्ड एवं तंत्र-मंत्र को बढ़ावा देने वाले तांत्रिकों, भोपों तथा इस प्रथा के कृत्य में शामिल लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने की मांग की। कोटा के प्रमुख समाचार पत्रों में कई बार प्रकाशित खबरों को आधार बनाकर आर्य समाज ने इस प्रकार के कृत्य के समय मौजूद चिकित्साकर्मियों एवं सुरक्षाकर्मियों के उदासीन व्यवहार को अंधविश्वास निरोध कानून का खुला उल्लंघन मान भविष्य के लिए पाबंद करने की मांग की है। श्री चड्ढा ने बताया कि वर्ष २०१८ को सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा अंधविश्वास निवारण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। वर्ष के दौरान आर्य समाज द्वारा अंधविश्वास एवं पाखण्ड के विरोध में अनेक जनजागृति कार्यक्रम संचालित किए जा रहा है।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर गौरव गोयल ने आश्वस्त किया कि जो भी हो प्रशासन उसके विरुद्ध उचित कार्यवाही करेगा। आप लोग भी आर्य समाज के माध्यम से अंधविश्वास के विरुद्ध लोगों को जागरूक करें। *(अर्जुनेदव चड्ढा)*

## निराश्रित बच्चों के साथ मनाया जन्मदिन

### उपहार पाकर बच्चे हुए खुश

कोटा। रंगाबाड़ी स्थित मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के मध्य जाकर डी.ए.वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने अपनी पत्नी व पुत्र के साथ अपना ४६वाँ जन्मदिन मनाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान के बच्चों के द्वारा गायत्री मंत्र के सस्वर गायन एवं भजन से हुआ। इस अवसर पर शोभाराम आर्य ने संस्थान के बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में कभी निराश मत होना, कभी अपने आपको हीन मत समझना क्योंकि समाज में ऐसे अनेक लोग हैं जो आपके जीवन के स्तर को उठाने के विषय में लगातार सोचते रहते हैं। इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा एवं आर.सी.आर्य ने शोभाराम आर्य को जन्मदिन पर शुभकामनाएँ दीं साथ ही यह विश्वास व्यक्त किया कि ईश्वर करे कि आपकी समाजोपयोगी कार्यों के प्रति रुचि इसी प्रकार न केवल बनी रहे बल्कि इससे भी उच्च स्थिति को प्राप्त करे। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के सभी बच्चों को उपहार दिए गए तथा अन्य अध्यापकों कर्मियों व अतिथियों के साथ सभी ने जलपान किया। संस्थान की डॉ.अंजलि निर्भीक ने आर्य समाज एवं अन्य सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। *(अरविन्द पाण्डे)*

### अपनी बात

जून २०१८ अंक के साथ आर्य लोक वार्ता हिन्दी मासिक प्रकाशन के २० वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। २० वर्षीय यात्रा की पूर्णता आत्मचिन्तन और आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करती है। अस्तु, हम अपने पाठकों और सहयोगकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं तथा अनुरोध भी करते हैं कि अपनी सहयोग राशि अविलम्ब प्रेषित करने का कष्ट करें क्योंकि दिन प्रतिदिन प्रकाशन कार्य काफी व्ययसाध्य और श्रमसाध्य होता जा रहा है। ऐसी दशा में हमें अपने सुधी पाठकों पर ही भरोसा रहता है। २० वर्षों के अनवरत प्रकाशन का सम्पूर्ण श्रेय हमारे स्वाध्यायनिष्ठ पाठकों को है। कृपया अपनी श्रेणी की सहयोग राशि उपलब्ध कराने में शिथिलता न करें।

**'धधकते पृष्ठ' काव्य कहाँ से प्राप्त करें?**

'धधकते पृष्ठ' काव्य हेतु लखनऊ में निम्नांकित स्थाना पर सम्पर्क करें-

१. कार्यालय, आर्य लोक वार्ता, १६/८३८, प्रथम तल, इन्दिरा नगर, रिंग रोड, लखनऊ-२२६०१६, मो.६४५०५००१३८
२. श्री पाल प्रवीण, एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ, मो.७३०६८२०५८१
३. श्री सुरेश चन्द्र तिवारी, सेक्टर-आई, जानकीपुरम, दिव्यता पैलेस के निकट, लखनऊ, मो.६४५२१३२००६

**विशेष** : (१) 'धधकते पृष्ठ' का वास्तविक मूल्य १५०रुपये है, किन्तु आर्य लोक वार्ता के सदस्यों को यह मात्र १०० रुपये में ही उपलब्ध है। (२) २५ या इससे अधिक पुस्तकों पर समुचित छूट (कमीशन) का प्रावधान है। एतदर्थ प्रसार व्यवस्थापक अमित वीर त्रिपाठी से वार्ता करें-मो.६७६५४४५६००

कोई भी सहयोग राशि बैंक ऑफ बड़ौदा की किसी भी शाखा पर निर्धारित विवरण के साथ जमा करके सूचित करें। **-सम्पादक**

वार्षिक निर्वाचन

### आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में प्रधान पद के लिए डॉ.भारत भूषण जी की देखरेख में चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न हुई जिसमें बहुमत के आधार पर श्री.दिनेश कुमार पाण्डे को विजयी घोषित किया गया। नवनिर्वाचित प्रधान श्री पाण्डे जी ने अपनी कार्य कारिणी का विस्तार किया और नव गठित कार्यकारिणी के लिए शपथ समारोह का आयोजन किया। राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता डॉ.जयदेव जी ने सभी अधिकारियों तथा सदस्यों को शपथ दिलाई। इस अवसर पर डॉ. विष्णुदेव सत्यार्थी तथा डॉ.सत्यदेव निगमालंकार ने नव निर्वाचित अधिकारियों एवं सदस्यों को आशीर्वाद दिया। नव निर्वाचित अधिकारियों एवं सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं-

| | |
|---|---|
| श्री दिनेश कुमार पाण्डे | प्रधान |
| श्री सदानन्द मौर्य | उपप्रधान |
| श्री सन्तोष मुनि | उपप्रधान |
| श्री मधुसूदन आर्य | उपप्रधान |
| श्री सतीश कुमार वर्मा | उपप्रधान |
| श्रीमती सविता शर्मा | मंत्री |
| श्रीमती सुशीला श्रीवास्तव | उपमंत्री |
| श्री महावीर सिंह | उपमंत्री |
| श्रीमती आभा गर्ग | उपमंत्री |
| श्रीमती सरोज सहगल | उपमंत्री |
| श्री रोशन लाल रावत | कोषाध्यक्ष |
| श्रीमती सुशील नागपाल | पुस्तकालयाध्यक्षा |

अंतरंग सदस्य-सर्वश्री यशपाल सचदेवा, विजय मुनि, एम.एन.चोपड़ा, विनोदेश छाबड़ा, सुश्री इन्दु आर्या, श्रीमती आभा सूदन, श्रीमती नीलिमा भगत, रती राम, पोषण कुमार मिश्रा।

### आर्य समाज आदर्शनगर

दि.१०.०६.१८ को आर्य समाज आदर्श नगर आलमबाग का वार्षिक साधारण अधिवेशन तथा वर्ष १६१८-१६ के लिए निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुए-

| | |
|---|---|
| कर्नल ओमप्रकाश वर्मा | संरक्षक |
| श्री राजेन्द्र हूजा | संरक्षक |
| श्री सतीश चन्द्रबिसारिया | प्रधान |
| श्री हरीश निझावन | उपप्रधान |
| श्रीमती विजयारानी भटनागर | उपप्रधान |
| श्री रुद्र स्वरूप | मंत्री |
| श्री सुभाष चन्द्र विज | उपमंत्री |
| श्रीमती सुनीता शर्मा | उपमंत्री |
| श्री वीरेन्द्र निझावन | कोषाध्यक्ष |
| श्री आत्मप्रकाश बत्रा | सहकोषाध्यक्ष |
| श्रीमती शृंखला | भण्डारनायक |
| श्री आनन्द स्वरूप | पुस्तकालयाध्यक्ष |
| श्री अम्बरीश अग्रवाल | लेखा निरीक्षक |

अंतरंग सदस्य-सर्वश्री प्रताप कुमार साधक, सतीश निझावन, अशोक तलवार, सुशील कुमार, सुरेश धनकानी, श्रीमती उमा वर्मा, श्रीमती सुमन भारती, सुश्री विनीता भाटिया, युधिष्ठिर कुमार आहूजा। *(रुद्र स्वरूप)*

### आर्य समाज चन्द्रनगर

दि.०३.०६.१८ को आर्य समाज चन्द्र नगर आलमबाग के वार्षिक अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की कार्यवाही सौहार्द पूर्ण वातापरण में सम्पन्न हुई। सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि गत वर्ष१६१७-१८ की कार्य समिति को इस वर्ष भी सेवा करने का मौका दिया जाय, मुख्य पदाधिकारी-

| | |
|---|---|
| श्री रण सिंह | संरक्षक |
| श्री अरुण कुमार विरमानी | प्रधान |
| श्री विद्यासागर बग्गा | मंत्री |
| श्री सुशील कुमार पाण्डेय | कोषाध्यक्ष |

के रूप में इस वर्ष भी कार्य करते रहेंगे। समस्त पदाधिकारियों एवं कार्य समिति के सदस्यों के प्रति शुभकामनाएँ।

लखनऊ-समाचार

## श्री पाल प्रवीण का 82वाँ जन्म दिवस

२०.०६.२०१८। पर्यावरण विशेषज्ञ श्री पाल प्रवीण ८२वें जन्म दिवस के अवसर पर योगाश्रम, अलीगंज में एक आध्यात्मिक समारोह का आयोजन किया गया; जिसमें नगर के गण्यमान व्यक्तियों ने भाग लिया तथा श्री पाल प्रवीण के प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। पूर्व न्यायाधीश श्री के.एल.शर्मा, श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल, बैंकों के अधिकारीगण तथा पारिवारिक जन इस अवसर पर उपस्थित थे। कवि गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने पाल प्रवीण जी की प्रशस्ति में कई सारगर्भित स्वरचित दोहे सुनाये। विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर डॉ.बृजेन्द्र निगम ने आध्यात्मिक कविता प्रस्तुत की तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपनी नवप्रकाशित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' के अंश सुनाये।

समारोह के प्रारम्भ में ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ का आयोजन डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। 'आर्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक की ओर से श्री पाल प्रवीण को विशिष्ट भव्य स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम को सुव्यवस्थित स्वरूप श्री पाल प्रवीण के सुपुत्र श्री अभिषेक एवं पुत्रवधू श्रीमती गीतांजलि ने प्रदान किया। इस अवसर पर सुरुचिपूर्ण रात्रिभोज की व्यवस्था श्री पाल प्रवीण के परिवार द्वारा की गई। श्री पाल प्रवीण ने समागत अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

## 'शांतिधाम' कहानी संग्रह का लोकार्पण

प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती नीरजा द्विवेदी के नवप्रकाशित कहानी संग्रह 'शांतिधाम' का लोकार्पण सी.एम.एस. गोमती नगर के सभागार में 'ज्ञान सागर संस्थान' के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में अनेक ख्यातिप्राप्त एवं प्रबुद्धजनों ने भागीदारी की। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री के.विक्रम राव ने की एवं मुख्य अतिथि डॉ.सुल्तान शाकिर हाशमी थे। डॉ.विद्या बिंदु सिंह के विशिष्ट आतिथ्य एवं डॉ. अंजना मिश्रा के कुशल संचालन में कार्यक्रम गरिमापूर्वक सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता डॉ.ऊषा सिन्हा ने इस कहानी संग्रह की प्रत्येक कहानी को बालक-बालिकाओं एवं युवजनों के लिए अत्यंत प्रेरणास्पद एवं पथप्रदर्शक बताया। मुख्य अतिथि के अनुसार यह कहानी संग्रह समाज को सही राह दिखाने एवं सामाजिक सौहार्द स्थापित करने हेतु एक नीतिग्रंथ के समान है। अध्यक्ष सहित सभी वक्ताओं ने 'शांतिधाम' शीर्षक कहानी को निरीह पशु पक्षियों के प्रति मानवीय हृदयहीनता की श्रेष्ठतम कहानियों में बताया एवं नीरजा द्विवेदी को साधुवाद दिया। *(महेशचंद्र द्विवेदी)*

## मुख्यमंत्री को बधाई

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षा की धार्मिक नगरी मथुरा में पूर्ण नशाबंदी का आदेश देने पर मेधा जागृति मिशन के अध्यक्ष श्री राजेश प्रकाश शर्मा 'आग्नेय' एवं उनके सहयोगियों, नवनीत निगम, मंत्री, डॉ.मोहनलाल अग्रवाल(उपाध्यक्ष) डॉ.अजयदत्त शर्मा (संरक्षक), अखिलेश निगम, ज्ञानजी महाराज, कृष्णानन्द राय, ब्रजेश कुमार मिश्र एडवोकेट, के.के.गुप्त, मृत्युंजय प्रसाद गुप्त आदि ने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को हार्दिक बधाई दी है। श्री आग्नेय ने आशा प्रकट की कि मुख्यमंत्री के इस आदेश से महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों पर अंकुश लगेगा तथा स्वस्थ समाज का विकास हो सकेगा।

### आर्य्य लोक वार्ता

**'ऋत्विक्-मंडल'**

(प्रतिवर्ष 1500 रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**, अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन. टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान**; नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; आर.के.शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, **फैजाबाद**; श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कृष्णा बजाज, **बरेली**; श्रीमती रेनू भसीन, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; महात्मा प्रेममुनि, आर्य समाज, हसनगंज पार, **लखनऊ**; श्रीमती अनीता सिंह, प्रिंसिपल, डी.ए.वी.एकेडमी, टाँडा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती वेद रतना खत्री, हिन्द नगर, आलमबाग, **लखनऊ**; श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**; श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, कुर्सी रोड, **लखनऊ**; श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्र नगर, **लखनऊ**; रवीन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; महेशचन्द्र द्विवेदी, विवेक खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ**; कुमुद गुप्ता, अलीगंज, **लखनऊ**; आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; श्रीमती यशोदा शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; सुधा चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ. सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, **लखनऊ**।

लखनऊ-समाचार

## आर्य वीर प्रशिक्षण एवं संस्कार निर्माण शिविर

१५.०६.१८। सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ के तत्वावधान में १५ से १७ जून तक आर्ष गुरुकुलम्, रसूलपुर कायस्थ, शुक्ला चौराहा जानकीपुरम में आयोजित होने वाले आर्य वीर प्रशिक्षण एवं संस्कार निर्माण शिविर का ईश प्रार्थना, सन्ध्योपासना तथा यज्ञ

विधान से शुभारम्भ हुआ। तीन दिन तक चलने वले पूर्ण आवासीय शिविर में शिविरार्थी शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक विकास के सभी पहलुओं का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में प्रथम दिवस २८ शिविरार्थी युवकों ने अपने को पंजीकृत कराया। आचार्य विश्वव्रत के निर्देशन में अमित शास्त्री ने प्रशिक्षण प्रदान किया तथा श्री नवीन कुमार सहगल, श्री आर. के.शर्मा, डॉ.सत्यकाम आर्य, वीरेन्द्र स्वामी, प्रताप कुमार साधक एवं श्री पाल प्रवीण इत्यादि के मार्गदर्शन में नई पीढ़ी को संस्कारित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। शिविर में आर्षग्रंथों, संस्कारों, योग विज्ञान, उपासना शास्त्र, स्वास्थ्य रक्षा, चरित्र निर्माण संबन्धी शिक्षाएँ आर्यवीरों को प्रदान की गईं। आर्य वीर दल उ.प्र.के पूर्व संचालक श्री बेचनसिंह आर्य (बगहा) की उपस्थिति ने उत्साह का संचार किया।

## डॉ.अग्रवाल की 56वीं वैवाहिक जयन्ती

०१.०६.१८। भाषा प्रतिष्ठापन परिषद् के संस्थापक सदस्य एवं संरक्षक डॉ. मोहन लाल अग्रवाल एवं श्रीमती सावित्री अग्रवाल की ५६वीं वैवाहिक वर्षगांठ दिनांक ०१ जून २०१८ को उनके इन्दिरा नगर आवास पर एक संक्षिप्त किन्तु भव्य समारोह के रूप में मनाई गई। आचार्या डॉ.निष्ठा विद्यालंकार ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा आशीर्वाद के रूप में दाम्पत्य प्रेम के सौन्दर्य पर

प्रकाश डाला। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने डॉ.अग्रवाल के मानवीय गुणों के साथ ही भाषा-साहित्य के प्रति उनके समर्पण एवं अनुराग की भावनाओं से परिचित कराया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री राजेश प्रकाश शर्मा, वीरेन्द्र कुमार सक्सेना, एस.सी.सविता, एस.के.अग्रवाल के अलावा सुश्री शोभा अग्रवाल एवं निशा तथा उनकी सहेलियाँ भी मौजूद थीं।

## मलयज ने उत्तर प्रदेश का गौरव बढ़ाया

मर्चेंट नेवी के लिए याग्य कैडेटों को तैयार करने वाली एमेट (AMET) यूनिवर्सिटी चेन्नई (तमिलनाडु) के त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे लखनऊ के मलयज त्रिपाठी का वर्ल्ड रैंकिंग में नम्बर वन शिपिंग कम्पनी 'मर्स्क' (MAERSK) द्वारा प्लेसमेंट हेतु प्रथम वर्ष में ही चयनित होना न कि लखनऊ वरन् उत्तर प्रदेश के लिए गौरव की

बात है। दक्षिण भारत के इस प्रख्यात प्रशिक्षण विश्वविद्यालय के इस सत्र में मलयज त्रिपाठी ही ऐसे कैडेट हैं; जो उत्तर प्रदेश के हैं। मलयज ने लखनऊ इन्दिरा नगर के स्प्रिंग डेल कॉलेज से विज्ञान गणित वर्ग में इण्टरमीडिट परीक्षा उत्तीर्ण की थी, और प्रथम प्रसास में ही एमेट यूनिवर्सिटी में सेलेक्ट हुए।

## सत्य प्रकाश सिंहल दिवंगत

लोक निर्माण विभाग के सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियन्ता श्री सत्य प्रकाश सिंहल का कसमण्डा एपार्टमेंट हजरतगंज में २८.०५.१८ को आकस्मिक निधन हो गया। स्व.सिंहल अपने पीछे पत्नी श्रीमती चित्रा सिंहल एवं दो पुत्रों-तरंग सिंहल, उमंग सिंहल को छोड़ गए हैं। स्व.सिंहल लोक निर्माण विभाग के कार्यकुशल अधिकारियों में गिने जाते थे। आपके निधन से लखनऊ में शोक की लहर दौड़ गई। ०१ जून २०१८ को रस्म पगड़ी का कार्यक्रम आपके आवास पर सम्पन्न हुआ जिसमें बड़ी संख्या में शोक संतप्त लोगों ने भाग लिया। आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य, सम्पादक आलोक वीर आर्य एवं प्रसार व्यवस्थापक अमित वीर त्रिपाठी ने शोक संदेश प्रेषित किए।

## शोक समाचार

६२, मयूर रेजीडेन्सी, फरीदी नगर निवासी श्री दिनेश कुमार शिंघल की धर्मपत्नी श्रीमती कामायनी शिंघल का लम्बी बीमारी के बाद दि. २० मई २०१८ को निधन हो गया। श्रीमती शिंघल (६२) अपने पीछे पति श्री दिनेश कुमार के अलावा पुत्र श्री अवनीश एवं पुत्री अंजुलिका को छोड़ गई हैं। दित्र २५.०५.१८ को मयूर रेजीडेन्सी पर श्रीमती कामायनी शिंघल की पुण्यस्मृति में वैदिक यज्ञ का आयोजन डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ; जिसमें बड़ी संख्या में पारिवारिक जनों ने भाग लिया। श्री अनिल कुमार अग्रवाल, राकेश कुमार अग्रवाल, श्रीमती अग्रवाल के अलावा राकेश त्यागी एडवोकेट की भागीदारी उल्लेखनीय रही। श्री त्यागी ने यज्ञ के संयोजन का दायित्व पूरा किया। 'आर्य लोक वार्ता' की श्रद्धांजलि!

## पुण्य क्षेत्र सरयूबाग अयोध्या - आर्यों का नया तीर्थ

## ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका–स्मारक

आर्य समाज के गौरव स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के संरक्षण में कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) एवं जस्टिस एस. एस.कोठारी लोकायुक्त राजस्थान की प्रेरणा एवं पं.दीनानाथ शास्त्री के मार्गदर्शन में सरयूबाग, अयोध्या में जमीन की रजिस्ट्री

का कार्य १६.०६.१८ को पूर्ण कर लिया गया है। इस कार्य में श्री नागेन्द्र नाथ शास्त्री, हिमांशु त्रिपाठी, परशुराम पाण्डेय फैजाबाद, आनन्द चौधरी एडवोकेट लखनऊ तथा आचार्य सत्यप्रकाश आर्य बाराबंकी का स्तुत्य योगदान रहा। सबसे अधिक धन्यवाद के पात्र हैं श्री मो.इरफान अन्सारी, जिनके औदार्य और धर्मानुराग से यह शुभ कार्य सम्पन्न हुआ है।

अब आर्य हिन्दू वेदप्रेमी जनता को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वह मुक्त हस्त से आर्थिक योगदान देकर इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम अंकित कराने हेतु कटिबद्ध हों। 'आर्य लोक वार्ता' प्रारम्भ से ही इस अभियान की अग्रणी भूमिका में है। दानदाताओं की नामावली प्रकाशित करते रहेंगे।

## अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ती

आर्य कुमार सभा, आर्य समाज शाहजहाँपुर के सक्रिय कार्यकता सदस्य, महर्षि दयानन्द के अनुयायी, काकोरी काण्ड के अमर बलिदानी वीर पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती दिनांक ६ जून २०१८ को जी.पी.ओ.पार्क में आर्य समाज इन्दिरा नगर लखनऊ के तत्वावधान में आर्य विदुषी श्रीमती कान्ति कुमार की अध्

यक्षता में मनाई गई। इस अवसर पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा इसके पश्चात् पं.अखिलेख कुमार लखनवी, अक्षय भाई, रामेन्द्र कुमार वर्मा, श्रीमती कुसुम वर्मा, सुरेन्द्र कुमार निगम, डोरीलाल आर्य इत्यादि ने रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन चरित्र और आदर्शों पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने बताया कि पंडित जी का बलिदान युग युग तक देश को प्रेरणा देता रहेगा।

## विनम्र को मिला सम्मान

१०.०६.२०१८। बाल साहित्य संस्थान अल्मोड़ा उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन गैरसैंण में देश के चयनित दस बाल साहित्यकारों में सम्मिलित श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' को डॉ.गोविन्द सिंह बिष्ट स्मृति बाल साहित्यकार सम्मान २०१८ से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान उन्हें उनकी बाल कृति 'बाल विज्ञान कविताएँ' पर डॉ.भैरूलाल गर्ग, डॉ.उदय किरौला, डॉ.धन सिंह मेहता 'अनजान', डा.रमेश चन्द्र पन्त आदि वरिष्ठ बाल साहित्यकारों की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

## श्रीमती सुधा चौधरी का सम्मान

दिनांक ६ जून २०१८ को चौधरी भवन, विनीत खण्ड-४, गोमती नगर में जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी.कॉलेज कानपुर की एसोशिएट प्रोफेसर डॉ.वन्दना नारायण द्वारा श्रीमती सुधा चौधरी, पूर्व प्राचार्या आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई को उनकी शैक्षणिक और सामाजिक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री कृष्णस्वरूप चौधरी (पूर्व

प्रशासनिक अधिकारी), डॉ.वेद प्रकाश आर्य प्रधान सम्पादक तथा अमित वीर त्रिपाठी प्रसार व्यवस्थापक आदि उपस्थित थे।

## अनुकरणीय

आर्य समाज आदर्श नगर (आलमबाग) के नैष्ठिक सदस्य स्व.सुरेन्द्र प्रताप जौहरी को मरणोपरान्त सम्मानित किये जाने पर श्री आत्मप्रकाश बत्रा पूर्व प्रधान ने 'आर्य लोक वार्ता' को पत्र लिखकर इस कार्य हेतु साधुवाद किया है। श्री बत्रा ने अपने पत्र में लिखा है कि आज के जमाने में लोग जीवितों की परवाह नहीं करते किन्तु आर्य लोक वार्ता द्वारा मरणोपरान्त सम्मानित करना-हृदय की शुद्धता और सच्चाई का परिचायक है।

श्री आत्म प्रकाश बत्रा ने अपनी आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ के समस्त सदस्यों को भी धन्यवाद किया है, जिन्होंने आर्य लोक वार्ता की सहयोग राशि वर्ष के प्रारम्भ में ही उपलब्ध कराकर अन्य संस्थाओं के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
**डॉ0 वेद प्रकाश आर्य**
कार्यालय–19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ–226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
**आलोक वीर आर्य**
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
**अमित वीर त्रिपाठी**
: 9795445800

संवाद प्रमुख
**गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'**
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
**श्रीमती सरला आर्य**
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
**श्रीमती निमिषा वाजपेयी**
: 7310119999

नवोन्मेष
**कृष्णा जी, पिंटेक**

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

## सहयोग राशि

| | | |
|---|---|---|
| सामान्य सदस्य | – | 100 रु. वार्षिक |
| होता सदस्य | – | 1,500 रु. वार्षिक |
| संरक्षक | – | 15,000 रु. |
| प्रतिष्ठापक | – | 50,000 रु. |

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

**प्रतिष्ठापक**
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

**संरक्षक**
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ
सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

**परामर्श एवं सहयोग**
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

**सलाहकार**
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क / 234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।